140
I

१४०
१

अथ

रसिकप्रिया ''

महाराजकुमार इन्द्रजित प्रणीता ।

(हिन्दी भाषात्मक)

Rasikpriya

लायजेरतिकेरैलज्जाशयसोवाम ॥१७॥ मुग्ध
नवलवधू ॥ तासोंमुग्धानवलवधूकहतसयां
नेंलोइ ॥ दिनदिनदूनीदुतिवठैवरनिकेहेकवि
केइ ॥१८॥ मोहिवोमोहनकीगतिकोगतिहीपढैगी
वैंमकहाधोंपढैगी ॥ तोपैहैरोजनकीजपजेदिन
काहिमठेंहेंगियानमठैगी ॥ नैननकीगतिगूठ
वलावलोकेसवदासमुझकामिचठैगी ॥ माईकहौं
यहमाइगीदीपतिजोदिनदेहहंभांतिवढैगी ॥१९
॥ नवजोवनभूषितामुग्धा ॥ सोनवजोवनभूषि
तामुग्धाकोइहेवेस ॥ वालदसानिकेसेजहांजोव
नकोपरवेस ॥२०॥ केसवफूलिनचीभ्रकुटीकटिल
टिनितवलईवढूकाली ॥ वेंननिसोचसकोचसों
नेंननिकुटिगईगतिकीचलिवाली ॥ छोसकुचों
खैरोनधरोग्रवलेतुमकोंमिलहुवनमाली ॥ वा
कोश्रयाननिकामनकोंउरश्रायोहैंजोवनकेश्र
वतालो ॥२१॥ मुकतामनिनकीहेमुकतिउरी
सीनांकदायोंहंतदानैंनिकोंहसनसीवतीसी
है ॥ मोहनीकेमंत्रनिकेश्रषरानिकीसीरेषभृकु
टीलवेषछीभाविछुविकीसीहे ॥ विनचतराइकुम
कीसीउरुकेसेउरकुचसकुचेसेनयननिवि
गुकीसीहे ॥ केसोदासरूपकीसीसालापेमकी
सीमालाश्रजलोनरेषीसुनीतैसीश्राजदीसी
है ॥२२॥ नवलश्रनंगामुग्धा ॥ नवलश्रनंगाहै
इसो मुग्धाकेसवदास ॥ षेलेवोलेवालविधिहसे
विसोसविलास ॥२३॥ चंवलनहूजेनाचश्रंचलन
श्रेचोहाथसोवोनेंकसारिकाउलकतोलवाजे
म ? केरोरीपदुतिचंदमुषदेषियतदेरिकेंदुराइ
श्राउहारेसोदिषायोज ॥ मृगजमरालवालवाह
रेविहारिहेउश्रावेतम्हेंकेसवसोमोहूमनभायो
न ॥ छलेकेनिदासजेसेवचनविलासहनिसोपु

नीसुरतहूसोस्यामसषयोयोज्ञ ॥ २४ ॥ लज्जाप्रायरति
मुग्धा ॥ मुग्धालज्जाप्रायरतिवरनतकविरहिराति
करैजुरतिअतिलाजसोंपतिहिवढावेप्रीति ॥ २५ ॥
वोलीनहींवेवुलाएरहेहरिपाइपरेअरुओलीयोओ
डी ॥ केसवभेटिवेकोंभरिअंकछुडायरहेजकैमैपैन
छोडी ॥ सुषोचितैवेकोंकेतोकीयोसिरवोंपिउपैर छ
अंघटनिढोडी ॥ मैंभरिचित्रनतउचितयोनरहीगहि
नेंननिलाजनिगोडी ॥ २६ ॥ मुग्धाकोसयान ॥ मु
ग्धासोरहैनहीपियसंगसुनहुसुजान ॥ जोकोंहूं
सोवेसषीसुपनहिताहिसमांन ॥ २७ ॥ पाइपरेमनुहा
रिकेंरपलिकापरपाइधरेभयभीनें ॥ सोइगईकहिकै
सवकैसैंहूंकोरहिकोरिकसोंहनिकीनें ॥ साहसकै
मुषसोंमुषछ्वैछिनमेंहरिमांनिसवेसुषलीनें ॥ ए
कउसासहीकेउससैंसगरेहीसुगंधविदाकरिदीनें
॥ २८ ॥ मुग्धाकोसुरत ॥ मुग्धासुरतकरैनहीसपनेहूंसु
षमांनि ॥ छुलवलकीनेहोतहेसुषसोभाकीहांनि ॥
॥ २९ ॥ सषपैसषीनवीविदैकेंसोहैप्यारैकैषवाइकछुंम
र वारवसुकीनीवेंवस्तेहै ॥ कोमलम्रिणालिकासुमोहि
काकीमालिकासीवालिकाउडारीमीडिमानसूकि
पसुहै ॥ औनैंनविभातभयोकेसवसुनेकोंवातरेषी
आइगातजातभयोकिधौंअसुहै ॥ चित्रसीजोराषीइ
हचित्रनीविचित्रगतिकहिधौंनसरसिकयामेंकौंन
कैरैनेंहीरसुहै ॥ ३० ॥ मुग्धाकोमांन ॥ मुग्धामांन
करैनहीकरैतोसुनहुनिदांन ॥ योउरवाइछुडासु
न्योंउरपैजुजान ॥ ३१ ॥ वोलेंनवालवुलावतहून
ग्वेरग्वलिषिभुवपेमपरेषैं ॥ आपनौंहाथविलो
किविलोकिकयोतवकेसवबुधिविसेषैं ॥ छोट
वडीविधिरेषलिषीजुगआयुकीरेषसोकोंनजे
षें ॥ पेमसोंवोलसषीनदयोअकुलायकछोटि
कैस्रीहेरेषें ॥ ३२ ॥ इतिमुग्धाअथमध्या ॥ ८

केसौदाससबसतन्यकामकेप्रकासघोषघटघरघरघे
रघेनैछायोहै ॥ रतिकीसीरतिनाथरूपरतिनाथके
सौकहेकेसौदासरूठकौनपहिपायोहै ॥ ४८ ॥ मध्या
धीराधीरा ॥ कान्हभलेजूलैसमुझाइहोमोहसमुझ
कोज्योंतुमसाेहै ॥ केसवआपनैमानिकसैमनहा
थिपरायेकैनेलयोहै ॥ नैननहीमिलिवेकरिरि
अवैनैननकोमिलिवोजुरह्योहै ॥ जारकहोतुम
जैसेसषीसदुसहीगुपालमेंअैसैकह्योहै ॥ ४९ ॥
इतिमध्याअथप्रौढा ॥ सुनिसमसतरसकोविदावि
चित्रविभ्रमाजाति अतिआक्रामितनायकालक
ष्मांतिसुभाति ॥ ५० ॥ समसतरसकोविदाप्रौढा ॥
सोसमसतरसकोविदाकोविदकहतवषानि ॥ जो
रसभोवैशीतमहितताहीरसकीदानि ॥ ५१ ॥ देषीहै
गुपालएकगोपिकाअनूपरूपसोनैनतैसमूनीवास
सोंषेतेसुहाइहै ॥ सोभाईसुभाइअवतासजीयोघनं
स्यामकिधोंरहदामिनीयोकोमितीकैआइहै ॥ दे
वीकोउदानवीनवीनेमानवीनहोइऐसीभोनवी
नहावभावभारतीपढाईहै ॥ केसौदाससवलषसा
धनकीसिद्धिरहमेरेजानिमैंनहीसोमैंनकाकीजा
ईहै ॥ ५२ ॥ विचित्रविभ्रमाप्रौढा ॥ अतिविचित्रवि
भ्रमसदाप्रौढाप्रगटवषानि ॥ जाकीदीपतिहतिका
पियहिमिलावेआनि ॥ ५३ ॥ हेगतिमंदमनोहरके
सवआनंदकंदहियेतुलहेहैं ॥ भौंहविलासनिको
मलहासनिअंगसुवासनिगाठेगहेहैं ॥ वंककिलो
र कनिकोंअवलोकिसमोहेनंदकुमाररहेहैं ॥ एतेनौ
कोमकेवांनकहावतफूलनकेविधिमूलिकहेहैं
५४ ॥ आक्रामितनायकाप्रौढा ॥ सोआक्रामित
नाइकाप्रौढाकहिदैचित्र ॥ मनसावाचाकर्मना
जिहवसकीनेंमित्र ॥ ५५ ॥ नोहितगायबजावतना
[illegible] रनायो ॥ जाहूमेंआनवे

७ निंगौ क्षा ऐंड आरी तेरौ तऊ न भायौ॥ भौवे सतौ कौ करि वें
करि भौंमि निभाग वडे वसतें करि पायौ॥ कांन्हें कों
सूधें जु चाहति नाहि सुचाहति हे अव पाइल गायौ
॥५६॥ लब्धायति प्रौढ॥ सो लब्धायति जांनि जे के
सब्ब प्रगट प्रमांन॥ कांनि करै प्रति कुल सैवें प्रभुता
प्रभुहि समांन॥५७॥ आजु विराजत हैं कहि केस
व श्री वृषभान कुमारि कन्हाई॥ कांनि विरंचि विवाहि
क्रम कांम रची जु वची सव ब्रक्ष निवनाई॥ अंग वि
लोकि त्रिलोक में ऐसी को नारि निहारि न ना
नवाई॥ मूरतिवंत सिंगार समीप सिंगार किये
जु सुंदरताई॥५८॥ अथ प्रौढा धीरादि भेद॥ अ
दर मांक अनादर हि प्रगट करै हित होइ॥ आकृत
पदु रावई प्रौढा धीरा होइ॥५९॥ सादरा प्रौढा धीरा
॥ आवत देषि लिए उठि आगे है कै सव आपही आ
सन दीनें॥ आपही पाइ पषारि भले जल पांनी कौ
भोजन लाइ नवीनें॥ वीरी वनाइ कै आगे धरी जव
वे हरि कों करवी जनो लीनें॥ वांह गही हरि ऐसें क
ह्यो हसि मैं तौ रतौ अपराध न कीनें॥६०॥ आकृ
ति आपदुरावई प्रौढा धीरा सोइ॥ चित न वति हसि वो
लति जि स्वहि हि पितसदा वस होइ॥६१॥ प्रौढा धीरा
आकृत गुप्त॥ चित आ चित आग हंसा एहे सो जु उ
ठांयें ते वो लौ रहो नित मांनें॥ सौंह अनेक निआव
दु अंक करे रति को प्रति रैं नि किरौनें॥ षवांयें ते षा
प्या। दु वैरी नाइ विरी जनु आई हो के सव आज हे होगी नें
मोहन के मन की मोहनी सी कहौ इह धौं सिषई सि
षकौनें॥६२॥ प्रौढा अधीरा॥ वात कहै सव वक्र वि
धि पियकी वात निवेरि॥ उतर तिन हि न आवई॥ प्रौढा
धीरा हेरि॥६३॥ हित के रतरे षुह रेष्यो सवे हित वात
सुनै जु सुनी सव ही है॥ इहु तौ कछु और वहै सव ही
सौंह करौ जु करी [illegible]

ऊहमकेसवरूठासवेहमसोंजुकहीहैं ॥ कछुमान
कीयोअपमानकर्योजुहसौअवकेहसिवेकीरही
है ॥ ६४ ॥ अथप्रौढाअधीरा ॥ पियकोअतिअपराधा
आ गनिहितनकेहेहितपॉनि ॥ कहतअधीराप्रौढति
हिकेसवरसवषांनि ॥ ६५ ॥ हौंसषपाइसिषाइरही
सिषसीषनलसिषतेहूं सिषाई ॥ मेंवडूतेंदुषपाइ
हूंदेष्यापेकेसवक्यांहूंकुटेवनजाइ ॥ इंडरीपेंविनु
साधुनिहूंसंगछूटतिक्यांषलकीषलताई ॥ देषदु
पु हेमकेंकीपुटकोटिघटेनमिटेविषकीविषमाई
॥ ६६ ॥ प्रौढाधीराधीरा ॥ मुषरूषीवातेंकेहेजियमेंपि
पकीभूष ॥ धीराधीराजोनिजेजेसीमीठीऊष ॥ ६७ ॥ हौं
मनमैलेनवोल्यौंलोकछुअवछाडुबोलवोवोल
हैसोहै ॥ केसवद्यौंओरनसोंरसरासरस्योरसवाह
सवेहमसोंहैं ॥ देषडुधौंइकवारसंकोचनअरस
लोचनआरसीसोंहैं ॥ आरजुवेसेईसाजसोंअ
जलभूलिगईपियकानिकीसोंहैं ॥ ६८ ॥ इतिस्व
कीया ॥ अथपरकिया ॥ सवतेंपरपरसिद्धजगता
कीप्रियाजुहोइ ॥ परकीयातासोंकहेपरमपुरानेंलो
इ ॥ ६९ ॥ परकीयभेद ॥ परकीयाहेभांतिकीऊढाए
कअनूढ ॥ जिनहिदेषिसुनिहोतसुरींसंततमूठ हे
अमूढ ॥ ७० ॥ अथऊढाअनूढालछिन ॥ ऊढाहोइ
विवाहिताअविवाहिताअनूढ ॥ तिनकेकहौंविला
ससवकेसवगूढअगूढ ॥ ७१ ॥ ऊढालछिन ॥ वेठीस
षीनकीसोभोसभासवहीकेसुनेननिमांझिवसो
वगेहेवातवनाइकैहेमनहीमनकेसवरासहेसे
षलतेहेरतषेलचलैतेपियचित्रविलावततयांविलसे पि
लोकुजानेंनहीइगसेरिकेवकितेहेहरिआननछे
निकेसे ॥ ७२ ॥ अनूढालछिन ॥ वेटीदुतीइजनानि
नेंवनिश्रीवृषभांनकुमारिसभागी ॥ षेलतहीसखि
...परिवाकेभईतिहषेलषरीअनुरागी ॥ पाछेंतेके
...वालिलकेसुनिकेविनवा...उतरीजागी ॥ जौ

...ताबात क हिय हूना प... ॥ चार प्रकार दिलो की...
॥ लोजगत नीप सती... जिगर ही... मेसव...
॥ जं कि च द कृती ॥ ७१+१

नैंन को उ कवै हरि कै सुरमारग ही सर सौ इग लागा ॥
काहू सौं न कहै कछू वात अनूठा गूठ ॥ सषी सहेली
सौं कहै उठा गूठ अगूठ ॥ १३ ॥ जगनाइक की नाइका
वरनी केसवदास ॥ तिन के दरसन रस कहूं सुनिय
छन्न प्रकास ॥ १४ ॥ इति श्रीमन महाराजकुमार श्री
इंद्रजीत विरचितायां रसिकप्रियायां स्वकीया पर
कीया वर्ननं नाम त्रितिय प्रभावः ॥ ३ ॥ अथ दरस
न लछिन ॥ दोहा ॥ दरसैं दरस होंहि सकाम सरीर
दरसन च्यारि प्रकार कौ वरनत हैं कवि धीर ॥ १५ ॥ ए
क जु नीकें हि देषिये इक जो दरसन चित्र ॥ तीजो सपनें
देषिये चौथो स्रवन निमित्र ॥ २ ॥ साछात दरसन ॥
नीर भ्रष दुति देह की गई सुनत ही जाहि ॥ को जांने
कै है कहा केसव देषे ताहि ॥ ३ ॥ राधिका को प्रछन्न
साछात दरसन ॥ चंद्रकला छंद ॥ कहि केसव श्री
वृषभांनकुमारि सिंगारि सिंगार सवे सरसै ॥ सवि
लास चिते हरि नाइक त्यों रति नाइक सायक से वर
सै ॥ कव हूं मुष देषत दर्पन में उपमा मुष की सुषमा
परसै ॥ जनु आंनदकंद सपूरन चंद दुहूं रवि मंड
ल में दरसै ॥ ४ ॥ राधिका को प्रकास साछात दरसन
॥ पहिलें तजि आरस आरसी देषि घरीक घसै घनसा
र हि लै ॥ पुनि पोंछि गुलाव तिलौंछि फुलेल अंगौंछे
में आछे अंगौछनि कै ॥ कहि केसव मेद जवादि सों मां दि
औ जि इतै पर आंछे में अंजन दै ॥ वहु रयो दुरि देषि जो देषो
तो देषि री लाज तौ लोचन लागी ये है ॥ ५ ॥ कृस्न को
प्रछन्न साछात दरसन ॥ भाल गुही गुन लाल लटै
लपटी लर मोतिन की सुषदैनी ॥ ताहि विलोकत आ
रसी लै कर आरस में इक सारसिनैनी ॥ केसव कान्ह
दुरें दरसी परसी उपमा मति सौं अति पैनी ॥ सूरज मं
डल में ससिमंडल मध्य धसी मनौं ताहि त्रिवेंनी ॥ ६ ॥
श्री कृस्न को प्रकास साछात दरसन ॥ इक तौ नर ओर
उरोज अनूप मनो मन मोहन हार महारी ॥ लषि चितै...

लैनरुनीनहूंकौनसूंनैननकीकेसबबातकहारी॥हि
तसौंहितकीकहिहीपरिआवतिकौलगिहौंदुरी
कौतिगहारी॥अवअंचलदेनदलालविकतरीरधि लो
नौषाविलोवनहारी॥७॥श्रीराधिकाकौप्रछंन्नचित्र
दरसन॥चित्रहूमैंहरिमित्रकीअतिविचित्रगतिगू
ढ॥प्रगटकौमकौकल्पतरुकहिनजाइमतिमूढ
॥८॥लोचननिचिलीयेइतकौंमनकीमतिजपपने
हनहीहै॥आननआयगरसमसीकररोमउठेदर
कंपगहीहै॥तासौंकहाकहिसकहिकेसबलाजसमु
द्रमैंबूडिरहीहै॥चित्रहूमैंहरिमित्रहिदेषतयौसकु
चीमनौंवांहगहीहै॥९॥श्रीराधिकाकौप्रकासचित्र
दरसन॥केसौदासनेहरसारीयकसजोइकैसैंजोतिदी
केध्यांनतमतेजहिनसाइहै॥आंषिनसौंबांधेअंत्र
काहूकीवुरीवधूषयांनीकौकहांनीरांनीप्यासकौ
दु वुझाइहै॥सषीमेरीईमुषीईदावरनैनीलषेइदिराकौ
मंदिरमैंसंपतिसिधाईहै॥औसेदिनऔसैंहीगवावति
गवारिकहाचित्रदेषेंमित्रकेमिलेकौसषपाईहै॥१०॥
श्रीकृस्नकौप्रछंन्नचित्रदरसन॥रूठिवेकौंतूठिवेकौ
मृदुमुसक्याइकैविलोकिवेकौमेरुकछूकहौनपरत
है॥केसौदासवोलैविनुवोलनिकेसुनेविनुहिलनिमि
लनिविनमोहिकेपासरतुहै॥कौलगिअरौंनोरूपध्या लौ
इप्याइराषीनैननीरदेषेंमीनकेसेधीरजधरतुहै॥चित्र
नीविचित्रकिननीकैंहीचितेजमनचित्रमैंनोदेषेंचि
तचौगुनौंजरतुहै॥११॥श्रीकृस्नकौप्रकासचित्रदर
सन॥अंतरिछगाछिनीनिजछिनीरवलछिनीनिआछी
आछीअछितेंनछविछमनीयेहै॥किन्नरीनरीसुनारीपं
न्नगीनगीकुमारिआसुरीसुरीनिहूंनिहारिनमनीयेहै
भोगनकीभामनीयोदेहधरेंदामिनीयौकामिनीयोक काम
हाऔसीकौंमैंकमनीयेहै॥चित्रहूमैंचितहिचुरावैलेति
केसौदाससरसकीसीरमनीरमांसीरमनी [illegible]॥१२॥श्री

स्वप्नदरसन ॥ दोहरा ॥ केसव दरसन स्वप्न को सरदादु
र्‍यो रहि होइ ॥ कवहूं प्रगट न देषिये यह जानें सव कोइ ॥ १३
॥ श्रीराधिकाको स्वप्नदरसन ॥ आनत हे हु रुठि हैरि अली
जन आन तरु ज्यो गहि एक लग ही त्यों ॥ केहों मैरी रीसनी कहा तो हि
भयो तो कछु चरुन तके सव वूझि सज्यो ॥ रीठि लगी कि
धों प्रेत लग्यो किलग्यो उरपीत मजा हिडरी यो ॥ ऐन
न सी करसी कैंरसीं कहि सषक सो वन तें अकला इ उठी
केयो ॥ १४ ॥ श्रीकृस्नको स्वप्नदरसन ॥ न षपर पर वी कों
पावे परंइ पहान एको विसो उर वसी उर मैं न आनि वी ॥
लो मसी पुलो मजान ति लसी ति लो तमान नमें नेंहु स ल
मान मन मैं न कान आनि वी ॥ जॉनि सनैं कों नजानि अ
वही जगा से जानि जो नु जां नि है जु वाहि यो ही पहिं वा
निवी ॥ चान कसी वानी मांहु भी वसी भवानी मी हा के
सौरा इर तिमें रती क जो ति जानि वी ॥ १५ ॥ अथ श्रवन
दरसन ॥ श्रीराधिकाजीको प्रछंन श्रवन दरसन ॥
सोंह दिवाइ दिवाइ अली इक वार हिं कान निआनि इँव
साए ॥ जांनें को के सव कान नि नेंकि नहे कवनें नानि
मां कु सिषाए ॥ लाज के साज धरे रहि हे सव नैंन न लै मन
ही सों मिलाए ॥ कैसी करों अव वैंपानि कसें रही हरे ही ह
रे हिय में हरि आए ॥ १६ ॥ श्रीराधिकाजीको प्रकास श्र
श्रवन दरसन ॥ कोलों पी कु कनर सरूप की वु नैं है प्या
स के सो रास कैसें नयनन भरि पी जिए ॥ वीर की सों मेरी
वीर वारी है न वारों आनि नैं कहु सिंहा कहि वलाइ तेरी
ली जिए ॥ वरसक माहि यहु वेस अलवेली वीतें दैहों
सुष सषि न क्यों अवही नदीजिए ॥ सरीलउ वावरी ए
अहा री ऐसे वृमैं तो हि नाहीं सों सनेह करि नाहं सीं न
कीजिए ॥ १७ ॥ श्रीकृस्नको प्रछंन श्रवन दरसन ॥ लं
घत है लो कालो कल्ली कन उलं घी जाइ सव ही न समु
झावे तो हि समुझावे को ॥ छाडन कहत तन तन कन
छूटै लाज धन मीन राषि रो उको विरह कहावेको ॥ से
नको सं [illegible] गूढ को [illegible]

कालरूपके जनधावेको ॥ दुषरूदुषहरिहरिहरहूतेमेरम
नजैसी लुनीतैसी तो हि आधिन दिषावेको ॥ १८ ॥
श्रीकृस्नकौ प्रकास श्रवनहरसन ॥ निपट कपट हठ
रर प्रेमकौ प्रगट करुवा रेवि सेव सी करु कैसें उरआनिये
कांमकौ प्रहरषनु कांमना कौ वरषनु कान्हकौ सक
रषनु सव जग जांनिये ॥ किधौं किसोर सल महि मो
हनी कौ भूषन है किधौं वृजवालनि कौ दूषनवषा
निये ॥ सुनु तहां कृस्नधाम वन वन डोलें स्याम राधेने
रैनाम कितु चाटमत्रमांनिये ॥ १९ ॥ हरसँसहरम नर
नीनके कहे परम रमनीय ॥ प्रगट प्रेम प्रभाव अव
कहों कछू कमनीय ॥ २० ॥ इतिश्रीमन्महाराजकुम्मा
रश्री इंद्रजीविरचितायां रसिकप्रियायां प्रछन्नप्रकास
हरसनननाम चतुर्थः प्रभावः ॥ ४ ॥ अथनायकना
यकाचेष्टावर्नेनं ॥ दोहरा ॥ तिनके चितकी जो निस
षि पियसों कहै सुनाय कहै सषी सों प्रीतम हि आपन
ते अकुलाय ॥ १ ॥ श्रीराधिकाकी सषी कौ वचन छ्रस
प्रति ॥ काल्हिकी ग्वालि तो आजडुलोंन सम्हारति
केसव कै सेंहूरहे हैं ॥ सारी है जाति उढेक वहू है जोर जी
तर ह्यो किर हाहु चिरैहैं ॥ कोरि विचार विचारति है उपचा
रनिके वरसें सषी मेंहै ॥ कांन्हवुरो जिन मानो निहारी
विलोकनि में विसवासविसै है ॥ २ ॥ श्रीकृस्नकौ वचन
राधिकाकी सषी प्रति ॥ मैं उनके रवी छोनिली यो सौ
उ उन्हेंउहेरो सरूप ह्यो है ॥ सो अव हौनो दिवावौ किवे गु
नौं जे सौ कछू उनरैन कह्यो है ॥ चूक पटी वकसावहु
केसव मैं उनकौं वहुदुष दयो है ॥ लेहि मिलाइ मिला
उ हिप्यो सषि तेरेग हैं ॥ मन मेरो गह्यो है ॥ ३ ॥ प्यास कै
रहीउदास भाजी भूषग हीवास के सो दास नीदरंकी
निंद्रानितठानी है ॥ मनिको मनोनलेर वि [illegible] विद्या
ईदे सोभा सुकी सेर मेरस [illegible] सुषसांनी ॥ [illegible] वसु सेल
गतगी तके लिकांन चरनी तिप्रीति उरपाकुनी सीपवि
पहुवांनीहै ॥ तो विनु कहै कोगाथ [illegible] जन [illegible] कै साथमा

हिकामिलावेहाथलाजकैविकानोहै ॥४॥ पियसौंअ
गरनप्रीतिकहुजितनेकरहितपाइ ॥ नेलवुकेसव
हासग्रववरनौसवनिसुनाइ ॥५॥ नववितिवेपिय
ग्रनतहीतववितिवेनिरसंक ॥ जांनिविलोकैग्रा
पनोग्रलिहिलगावैग्रंक ॥६॥ कवहूंकृतिकेडूक
रैग्रारससौंग्रैंडाइकेसवहासविलाससोवारवार
जंभाइ ॥७॥ झूठेहीहसिहसिउठेकेहैसषीसोंवात
ग्रैसैंमिसहीमिसप्रियपियहिदिषावैगात ॥८॥
योंहीपियपियानिप्रतिप्रगटतग्रपनीप्रीति ॥ सोप्र
छंन्नप्रकासकरिवुधिवलकरतसमीति ॥९॥ राधि
काकीप्रछंन्नचेष्टा ॥ वोरिवोरिवितवितवतमुदुमो
रिमोरिकाहेतेंहसतिहीयेहरषवढायोहै ॥ केसौरा
रकीसौंतूजंभातकहावारवारवीराषाहमेरीवीर
ग्रारसजोग्रायोहै ॥ ग्रैंडसौंग्रैंडातग्रतिग्रंचलउडा
तउरउरैरैउघरिउघरिजातगातछविछायोहै ॥ फूलि
फूलिभेटतिरहतिउरझूलिझूलिभूलिभूलिकहतेकछु
तेंग्राजपायोहै ॥१०॥ राधिकाकीप्रकासचेष्टा ॥ मेरी
मुदुचूंमेतेरीपूजीग्रासचूंमिवेकीवातैंग्रासग्रास
कोंमिरातप्यासडाढेहैं ॥ छोटेछोटेकरकहाछावतछ
वीलीछातीछीवेजाकेछुइवेकेग्रभिलाषवाढेहै ॥ षे
ने लजोग्रारहोतोषेलोजैसेंषेलियतकेसोहाइकीसौंतै
तकौंनषेलकाढेहै ॥ फूलिफूलिभेटतिहैमोहिकहामे
रीमदूमेटतिनजाइजेवेभेटिवेकौंठाढेहै ॥११॥ श्रीकृस्न
कीप्रछंन्नचेष्टा ॥ छोरिछोरिवांधेपागग्रारससोंग्रा
रसीलेग्रांनतहींग्रांनभांतिदेषतग्रनैसेहै ॥ तोरिता
रिडारततिनूकातमकौंनयरकौंनकेपरनयाइवावरे
ज्योंग्रैसेहै ॥ कवहूंचूटकीदेतचूटकिछुजावोकांनम
टकिग्रैंडातजुरीज्योंजंभातजैसेहौ ॥ वारिवारिकौंनपु
र[illegible]लामोहि[illegible]नतकछूकोकछूग्राजिकान्हके
सेहौ ॥१२॥ [illegible]कौप्रकासचेष्टा ॥ जोलगिलोचव्रे
मांइनिदेहिननोचननचावतसोकपहारु ॥ केसवमनुकरेवस
कारकेहारकजउकहीलैगनांक ॥ हारिरहेहरिक्योंहूंगिर

लोनमिलोंउंजोताहितैंतोमांगैसोपाउं॥ठाठीवैजाइ
मिलौमिलिवेकहुंऔरकहाकनियांकरिलाउं॥१३॥
॥अथस्वयंदूतत्वलछिन॥दोहरा॥जोवैंपांहूनमि
लैंकहूंकेसवदोउईठ॥तोनवखानैंआपहीवुधि
वलहौंहींवसीठ॥१४॥श्रीराधिकाकौप्रछन्नस्वयं
दूतत्व॥दूरतेदेषिवेकौंकैहौदीनमनाईदुतीलिषि
हीलिषिचीठी॥देषिमिल्योमनहौंहूंमिलौमिलिषि
लिवेहूंकीमिलीमतिमीठी॥ऐसेमैंऔरवलाइहौके
सवकैसैंहूंकांन्हकुमारदैदीठी॥कैहैनवारमृनाल
केतारलौंटूटैगीलालहमैंतुमईठी॥१५॥छुवोजिन
हाथसौंहाथहीयेंपलहीपलवाढतपेमकला॥नजा
नियेंजीमैंकहावसिजाइचलैएनिकेसवकौंनचला
मलैहींमलैंनिवहैजुभलौयहदेषिवेहीकीहलाइभ
को ला॥मिलिमनतौमिंवोरकहामिलिवौनअलोकदु
नेइल्ला॥१६॥श्रीराधिकाजूकौप्रकासस्वयंदू
तत्व॥धाइनहीघरदाईपरीजुरआईहैआईकीअ रिपिला
षिवहोउं॥पौरियैआवेंरतौंधौइतैपरजैवोसनैंसम
हादुषयाउं॥कांन्हनवेरदुन्यायनयोइनअलिनकौ
लागिहौंवहरांउं॥मोसंगसवसोवनआवेंकिहौइन
केसंगसोवनजाउं॥१७॥श्रीकृस्नकौप्रछन्नस्वयं
दूतत्व॥आपनैहीभायकेससोहनसरीकसैंवैकेसौ
हासहुलासज्योवचनचितहीनैहैं॥आपहीअगौंउ टा
कतलेतनाममेरौवेतौवापुरेमिलापकेसलापकं
रिहीनैहैं॥राधेकौंसुनाइकैंकहतऐसेंघनस्यांम
सवलकौंलैलैनामकांमभयभीनैहैं॥सोछिले
सखानिअवजैवोवनछांडौहैहमखेलिवेकौंसं
गसखासास्वामृगकीनैहैं॥१८॥श्रीकृस्नकौप्रका
सस्वयंदूतत्व॥वनजैजैचलौकोउठालहिकेसव
हैहमहैतुम्हरीअरिहै॥कछुषेलिसषेलनआव
नआजहिंभूल्यौनभूल्यौगरैपरिहै॥हिलहैहियमें

किधौंनाहीतऊहितनाहिहीयेंतोललालरिहा हम
सोंयहकहिफिरऐसोकहोजूकहीतौकहीवकहाक
रिहै॥१९॥केसोदासघरघरनाचतफिरतगोपसकपेरछ
कितेमरेईगनियतहैं॥वाहनीकेवसवलदाऊभएस
खासवसंगलैकोजैसदुषसीसधुनियतहैं॥मोहिंतोग
एहीवनैंदीहहरीपमालापाइगाइनसवारिवेकौंचिनतु
नियतहैं॥जोवनसोंनैनलोलवावरेभएहैंसवषरि
कषरेईआउसनैंसनियतहैं॥२०॥दोहा॥ऊठापु
निरहमानिहैंवहुविधिहितनिजनाइ॥आपनहींनेला
जतजिपियहिमिलैघकुलाइ॥२१॥अथकृष्ठाअकु
लावनसरवाप्रति॥यंधुनथकितपलमनोरथरथ
निकेकेसोदासजगमगजेसेगोलगीतमैं॥पवनविचा
रचकचकमनचितचढिमनतलअकासभवेघामज
लसीतमैं॥कौलौंरोषैंथिरवपुवापीकूपसरसमह
रिविनकीनैंवहुवासरवितीतमें॥ग्यांनगिरिफोरितो
रिलाजतरुजाइमिलोआपहीतेंआपगाज्योंआपनि
षिपीतमैं॥२२॥अथकृष्ठास्वयंदूतत्व॥जातिभईसं
गजातिलैकीरतिकेसवैहेनुलसौंहितफूल्योगवै
गयोगुनजोवनरूपकोपुन्यसोतोपलहीपलछूट्यो
कौंन्हतिहारीयेंआंनकीयेंकूहूंलाजकैकोनाकैहैंना
तोईहूट्यो॥छाड्योसवैहमहेरितुम्हैंतुमपैतननकोक
परोनहिछूट्यो॥२३॥दोहा॥अधिकअनूठालाज
तेपियपैजाइनआप॥कयोहूंकरिसषिसकैहैताकेउ
रकोताप॥२४॥अनूढाकेमनकोतापश्रीकसप
तिसषीकोवचन॥जोनैंकोकेसवकोंनैंकह्योकव
कोंन्हहमारेहिंडोरनिकूलै॥पांननघाइनपांनीपीवै
तवैतेभरिआंषिनलेतसमूलै॥जीहनहीवलिवेगिह
लाइल्योंलेइसकेलिकहाइतभूलै॥जोनतहौंउहकों
मकलीकुम्हिलाइगयेंवहुतोफिरिफूलै॥२५॥अ
प्रथममिलनस्थानवर्नेनं॥दोहा॥जनीमहैलस्मा
इघरसूनैंघरनिसचार॥अतिभयउनवच्योंमिल

न्योतेसवनविहार॥२६॥इनहीठौरनिहोतहैप्रथम
मिलनससार॥केसवराजारंककेरविराध्याकर
त॥२७॥जनीकेघरकोमिलन॥भेषकैकुमारि
काकौब्रजकीकुमारिकानिमांझसांझकेसोहास
वासपगयोलिकै॥कामकीलतासीचलेवेमपा
लीलीअमलराधिकाकेवुधिवलकैठभुजमे
लिकै॥दोरिहोरिदुरिदुरिमूरिमूरिअमिलावुला
षलाषभांतिकीअनूपरूपकेलिकै॥जनीकेअ
जिरआजुरजनीमेंसजनीरीसांचीकरीस्यांमवो
रमिहवनीषलिकै॥२८॥सहेलीकेघरकोमिलन
॥नैननिकैतारेनमेंराषोप्यारेपुतरीकेमुरलीज्यों
लाररापोहरसनवसनमें॥राषोंभुजवीचवनमाली
वनमालकरिचंदनज्योंचतुरचठाइराषोतनमें
केसोराइकंठकरिराषोकरिकुबलादैकरमकरम
केंहुंआनीहैभवनमें॥चंपककलीज्योंकान्हसं
षिहृषिदेवतासीलेहुमेरेलालइन्हैंमेल्हिराषोम
नमें॥२९॥धाइकेघरकोमिलन॥हसतषेलतपे
लमंदभईचंदद्युतिकहतकहांनीअरुनूगतपहेली
जाल॥केसौहासनीदवसआपनेआपनेंघरहरेंह
रेंउठिगईबालिकासकलवाल॥घोरिउठेगगनस
घनघनचहूंदिसिउठिचलेकान्हधाइवोलिउठी।
तिहीकाल॥आधीरातिअधिकअंध्यारेमेंकहांजेहै
हौराधिकाकीआधीसेजसोयरहौप्यारेलाल॥३०
सूनैंघरकोमिलन॥देषतहीचित्रआजसनीचि
त्रसालावालारूपकीसीमालाराधारूपकसहास
री॥नूपुरकेसुरनिअनूपरूपतानेंलेतपगतलता
लदेतअतिमनभावरी॥औसेमेंदिषाईदीनीओ
चकोकुंवरकान्हजैसेभगवानतैसेजाननवतास
री॥केसवकहेनपरेंअलजसलजसेवैजलजसेतो
वनजलदसेहैआवरी॥३०॥निसिचरकौमिल

ना॥एकसमैंसबदेषनगोकुलगोपीगुपालसमूह
सिधाए॥रातिह्वैआईचलेघरकोंदसहूंदिसमेंहैं प
महामठिआए॥इसरीबोलेतउसमुझैनहीकेस
वयाछितमैंतमछाए॥ऐसेंमैंस्यांमवियोग॥वि
हाकैलईउरलाइकीएमनभाए॥३१॥अतिभय
कौमिलन॥जानीआगिलागीब्रषभांनजूकैनि
कटभौहौरिब्रजवासीचलेचहूंदिसधायकै॥जहां
तहांसोरभारीभीरनरनारिनकीसबहीकीछूटि
गईलाजहायहायभायकै॥ऐसेमैंकुंवरकांन्हसारे
लकवाहरिकैराधिकाजगाईऔरजुवतीजगाइ
कैलोचनविसालचारुचिवुककपोलठ्ठमिचेपे
कीसीमालल्याववाललीनीउरलाइकै॥३२॥वत्सव
कौमिलन॥बालकीवरसगांठिताकीरीतिजामिहै
कौआईब्रजसुंदरीसबवारितनसैंनैंसो॥कैसोहासभ
र रभईनंदजूकेमंदिरनमध्यअवतैंधक्ष्योनकहूंकौंनै
सो॥गावतबजावतनवतनानानौरूपकरिजहांतहां
उमगतआनंदकौऔनैसो॥सांवरेकीसुनीसेजसोव
तहींराधिकाजूसोएईआंनिसांवरेउमानिमनगोनैंसो
॥३३॥व्याधिमिसकौमिलन॥सोधिनिहीननिदान
हीसउपचारविचारकीमनषिरांना॥वेदकेसासनव्याधिवि
नासनहोमैंकुनामनहूंनहिरांना॥केसववेगिचलीव
ल लिकैतिहींनभईब्रषभांनकीरांनी॥आएहोमेरिसनकुंकरि
कैउंवद्वराउनकैउहपारपरिरांना॥३४॥न्योतेमिसकौ
मिलन॥न्योतिकैंवुलाईइतीवेटीवृषभांनजूकीजैंवेर
कौंजसोदारांनीआंनीहैसिंगारिकैं॥भोजनकेभवनविलो
किवेकौंपानषातउपरिआकेलीगईआनंदविचारिकैं॥दे
षतहीषतहरिआंवतेकैंभागारेषिहौरिगहीव्यालऐसी
वैंनीउरनउरिकैं॥भेटीभरिअंकमनभायोकरिछाड्यौमुड
केसारिसोंमांडुयौलईवेसरिउतारिकैं॥३५॥वनविहार
कौमिलन॥हेदषिकान्हिगईकहिहैंनपसारहुंगोरसमैंरी

फुनिफेरी ॥ छाडोनहीमगुछाग्रोजुजाडुछुडावोविलोक
निलाजुलपेटी ॥ बातसम्हारिकेहौसुनिहेकोकुज्ञान
तेहोरहकौनकीबेटी ॥ जानतहैंहृषभानकीहैपरितो
हिनजानतकौनकीचेटी ॥ ३६ ॥ हरिराधिकामानसरोव
रकेतटठाढेरीहाथसोंहाथछियें ॥ प्रियकेसितपागप्रिया
मुकताछरराजतमालदुहूंकेहीयें ॥ कटिकेसवकाछि
नीसेतकसेंसवहीतननचंदनषोरिकीयें ॥ निकसेजनु
छीरसमुद्रहूतेंसंगश्रीपतिमानहुश्रीहिलीयें ॥ ३७ ॥
जलविहारकेमिलन ॥ रितुग्रीषमकीप्रतिबीसर
केसवषेलतहैंजमुनीजलमें ॥ इतगोपसुताउतहृया
रगुपालविराजतग्वालनिकेगनमें ॥ अतिबूडतहेंग
तिमीननिकीमिलिजाइउठेंअपनेंथलमें ॥ इहिभांर
तिमनोरथपूरिदोउजनहूरिरहेछविसोंछलमें ॥ ३८ ॥
॥ दोहा ॥ इहविधिराधारवनकेवरनेंमिलनविसेषि ॥
केसवहासविलासबहु ॥ बुधिवललीजिहुलेषि ॥ ३९ ॥
इतिपरकीया ॥ दोहा ॥ औरजुतनननीतीसरीकेंपावर
नैरहठौर ॥ रसमेंविरसनवरनियेंकहतरसिकसिर
मौर ॥ ४० ॥ प्रथममिलनथलमेंकहेअपनीमतिअनु
सार ॥ हावभाववरननकरोसुनिअबबहुतप्रकार ॥
४१ ॥ सबजितनीनाइकाबरनीमतिअनुसार ॥ केसव
दासबषानिअबबुधिवलआठप्रकार ॥ ४२ ॥ इतिश्री
मन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचितायांरसिक
प्रियायांप्रियाप्रियवेष्टावर्ननंनामपंचमप्रभाव
॥ ५ ॥ दोहा ॥ आननलोचनवचनमगप्रगटतमनकी
बात ॥ ताहीसोंसबकहतहैंभावकविनकेतात ॥ १
भावजोपंचप्रकारकेसुनिविभावअनुभाव ॥ स्थावी
सात्विककहतहैंविभचारिकविराव ॥ २ ॥ विभावलछि
न ॥ दोहा ॥ जिनतेंजगतअनेकरसप्रगटहोतअनयास
तिनसोंसुमतिविभावकहिवरननकेसौदास ॥ ३ ॥ सोवि
भावद्वैभांतिकेकेसवदासवषांनु ॥ अवलंबन
इकदूसरेउद्दीपनमनमांनु ॥ ४ ॥ जिन्हेंअतनअवलंब

१३ रसिक अवलंबन जानि ॥ जिन तें दीपति होत है सो उद्दीपव षा-
नि ॥ ५ ॥ अवलंबनस्थानवर्ननं ॥ छप्पय ॥ दंपति जो-
बन रूप जाति लछिन जुत सषि जन ॥ कोकिल कलित वसं-
श्र त फूल फूले दल अलि उपवन ॥ जलचर जल जुत अम-
ल कमल कमला कमला कर ॥ चातक मोर सु सबद तर-
डित घन अंबुर अंबर ॥ सुभ सेज दीप सौगंध ग्रह पान गा-
न परिधान मनि ॥ नव नृत्य भेद बीना दि सब आलंबन के
सब बरनि ॥ ६ ॥ उद्दीपन लछिन ॥ दोहा ॥ अवलोक-
१८ नि आलाप पुनि परिरंभन नष दांन ॥ चुंबना दि उद्दीहि म- प
रद्दन परस प्रमांनं ॥ ७ ॥ अनुभावलछिन ॥ आलंबन
उद्दीपके जे अनुकरन प्रधांन ॥ ते कहिये अनुभाव सब
भि दंपति प्रीति विधांन ॥ ८ ॥ स्थाईभावलछिन ॥ रति सह-
स अरु सोक पुनि क्रोध उछाह हि जांनि ॥ भय निंदा विस्मय
वे सहित स्थाई भाव बषांनि ॥ ९ ॥ सात्वक भाव ॥ स्तंभ स्वेद रो-
मांच सुरभंग कंप वैवर्न ॥ अस्रु प्रलाय सु अष्ट ए भाव आद-
र सभ वर्न ॥ १० ॥ बिभचारी भाव ॥ भाउ जो सब ही रसनि मे
उपजत के सब राइ ॥ बिना नियम तिन सो कहत बिभचा-
रीक बिराइ ॥ ११ ॥ निर्वेद ग्लानि संका तथा आलस दैन्य स
स मोह ॥ स्मृति धृति ब्रीडा चपलता श्रम मद म चिंता कोह ॥ १२
गर्व हरष आवेग पुनि निंदा नींद बिषाद ॥ जडता उतकंठ
सहित स्वप्न प्रबोध बिवाद ॥ १३ ॥ अपसमार मति उग्रता
त्रास सतके अनि व्याधि ॥ उन्माद कमरमरन भय आधि
वारु सस माधि ॥ १४ ॥ इति भाव अथ हाव लछिन ॥ प्रेम
श्री राधा कृस्न कौ तातें होत सिंगार ॥ ताके भाव प्रभाव तें उ-
पजत हाव बिचार ॥ १५ ॥ अथ हाव नाम ॥ हेला लीला
बि ललित मद बिभ्रम बिहृत बिलास ॥ किलकिंचित बिछि-
त अरु कहिं छोक प्रकास ॥ १६ ॥ मोटाय तनु पुनि कुट्टमित
बोधक दस बहु हाव ॥ अपने अपने बुधि कै लव बरनत हे- ब
क बिराव ॥ १७ ॥ अथ हेला हाव लछिन ॥ प्रगट न प्रेम प्र-
ताप तें भूलत लाज समाज ॥ सो हेला जिहि हरत मन रा-
धा श्री ब्रजराज ॥ १८ ॥ श्री राधाजू कौ हेला हाव ॥ अव- रस
लोकनि अंकुस मनौ बिअनुपम भुजपास भै लैंगल मेली १३

मृदुहासलषासउठाइमिलीवहेजौंन्हकीजोंमिनिमें
रूप्रकेली॥ अथरारसध्याइकीसवसकेसवरायकरी
निरातिनवेली॥ वनमेंवृषभांनसुतालषहीहरिकों
हरिजेतुरहिहेलांहिहेली॥१९॥ श्रीकृष्णजूकोहेला
हाव॥ बिंनसुनाइबुलाइलईतवमौनभुलाइकेंभांति
भलीकों॥ फूलिगयोमनफूल्योविलोकतकेसव
काननरासथलीकों॥ अथरारसघ्याइकीयोपरिरं
भनचुंवनकेसुषकामकलीकों॥ हेलांहिश्रीहरिना
गरश्रीजूहहसोमनश्रीवृषभांनललीके॥२०॥ अथ
लीलाहाव॥ करतजहांलीलानिकोंप्रीतमप्रीयाव
नाइ॥ उपजतलीलाहावतहांवरनतकेसवराइ॥२१
श्रीराधाजूकोलीलाहाव॥ पाइनिकोपरिवोअपमा
नअनेकसअपानसौंमांनमनैवो॥ केसवचौंकिचहूं
दिसचाहिवोजूदोतमोरुषवायवोषैवो॥ दीरकुचील
निउपरिपोढिवोपांनहिकेषरकेभगिज्रेवो॥ आंषि पि
नमूंदिकेंसीषनिराषिकाकुंजनितेंप्रतिकुंजनिजै
वो॥२२॥ श्रीकृष्णजूकोलीलाहाव॥ झांकिझरोषनिमें
मनेहैचढिऊचेअवासनिदेषनधावे॥ निंदितगोपचरि
त्रनकोंकहिकेसवध्यांनकेरगुनगावे॥ चित्रितचित्रमें
आपनपौअवलोकतआंनदसौंउरलावे॥ आगनतेंघ
रमेंघरतेंफिरिआंगनवासरकोविरमावै॥२३॥ अथल
लितहावलछिन॥ वोलनिहसनिविलोकिवोचल
निमनोहररूप॥ जैसेतैंसेंवरनियेललितहावअनुरू
प॥२४॥ श्रीराधिकाजूकोललितहाव॥ कोमलविम लि
लमनविमलासीसरवीसाथकमलाज्योंलीनेंहाथ
कमलसनालके॥ नुपुरकीधुनिसुनिभौंरेकलहंसनि
केवैंकिवौंकिपैरैवानवेटवामरालके॥ कंचनकेभारवु
वभारनिसकुचभारलचकिलचकिजातकटितटवा
लके॥ हरेंहरेंवोलतिविलोकनिहसतहरेंहरेंहरेंचल
तिहरतिमनलालके॥२५॥ श्रीकृष्णजूकोललितहा
व॥ वपलापटुमोरकिरीटलसैंमघवाघनसोभवदाव

तेहैं ॥ मृदुगावतआवतवैंनवजावातमित्रैंपूरनचाव
तेहैं ॥ उठिदेषिमदुभरिलोचनचातकचित्रकीतापवु
झावतहैं ॥ घनस्यांमेघनोघनवेषसोंकेसेवनेंवनतें
व्रजआवेहैं ॥१६॥ अथमदहावलछिन ॥ दोहा ॥ पूर
नप्रेमप्रतापतेंगर्ववढेवहुभाव ॥ तिनकेतरुनविका
रतेंउपजतहैमदहाव ॥१७॥ श्रीराधाजूकोमदहाव ॥
छविसोंछवीलीवृषभांनकीकुवरिआजुरहीदृतीरू
पमदमांनमदछकिकै ॥ मारहूतेंसुकुमारनंदकेकुमा
रताहिआपरीमनावनसयानसवतकिकै ॥ हसिहा
सिसोंहैंकरिकरियाइपरियरिकैसोरायकीसौंजवरहै
जियपजकिकैं ॥ तिहीसमैंउदैघनघोरघोरदांमिनीसी
लागीलोटिघनस्यामउरसोंलयकिकैं ॥१८॥ श्रील
लजूकोमदहाव ॥ महिमोहनीमोहिसकैनसषीच
पलाचलचित्रवषांनतहैं ॥ रतिकीरतिक्योंहूंनकों
निकैदुतिचंदकलाघटिजांनतहैं ॥ कहिकेसवओ
रकीवातकहारमनीयरमाहूनमानतहैं ॥ वृषभांनसु
ताहितमन्नमनोहरऔरहिडीठिनआंनतहैं ॥१९॥ अ
थविभ्रमहावलछिन ॥ दोहा ॥ ताकविभूषनयेमतेंज
होंहोंहिविपरीत ॥ हासनरसतनमनरसितमातिविभ्र
मकेगीत ॥२०॥ श्रीराधाजूकोविभ्रमहाव ॥ कटिके
तटहाररलयेटिलीयेकिंकिंकिनिलैउरमैंमाई ॥ करनूं सोंतर
परसोंपगपेंचाविनाअंगियासषिअंचलकीविसराई
करिअंजनरंजितवाहकपोलकरीजुतजावकनेंन
निकाई ॥ सुनिआवतश्रीहरिजुभूषनभूषनभूषनभू
लितहीउदिषाई ॥२१॥ श्रीकृस्नकोविभ्रमहाव ॥ नंदनं
दनदेषतहैंवनितागातवनीछविचंदनकेजलकी ॥ वृषभां
नकुमारिविलोकतहीरुचिचित्रैंमेंविभ्रमकीझलकी
भीजिजातनजांनतपांनिषातविरीकरियंकजके
दलकी ॥ विहसीसवगोपवधूहरिप्यांनकिलोचनदृष्टि रस
दुगंचलकी ॥२२॥ अथविहृतहाव ॥ दोहा ॥ वोलनहूं १५

केसमयमैंबोलनदेयनलाज॥ विहृतहावतासौंकहत
केसवकविकविराज॥३३॥श्रीराधाजूकोविहृतहा
व॥ मेरेकहेंरहिसज्जतऊकिरियाषमज्योंहठिकाठेरे
हैगो॥ पैरिबोपेमसमुद्रपारसकरीसेंकरेंछतकेंगोनिब
हैगो॥ हौंसमरेसजनीसगरीकबहूंहरिसौंहसिबात
कहैगो॥ पीचितकीचित्रसारीचढीचित्रकीपुतरीभ
ईकौंलौंरहैगो॥३४॥श्रीकृस्नजूकोविहृतहाव॥
केसवराइसौंआजसखीवृषभांनकुंवारिउरांहनौं
दीनौं॥ गीरिदईअनमानदईअरविंदनिसौंमनुकेहि
तहीनौं॥ सीषदईसुषपाइलईउरलाइसगंधचढा
इनवीनौं॥ ऊतरदेइकोनंदकुमारकछूमिसिनीचै
तेंऊचोनकीनौं॥३५॥अथविलासहाव॥दोहा॥
षेलनबोलनहसनअनचितवनचलनप्रकास॥ जे
लथलकेसवदासकहिउपजनहावविलास॥३६॥
श्रीराधाजूकोविलासहाव॥ किलकनअलकनऊ
तिलकचिलकमिसभौंहनिमेंविभ्रमनिभौंनमेदरी
नौहै॥ लोचननिसोचनिसंकोचनिनचावननदस
नचमकहीचकितचितकीनौंहैं॥ मंदहासमुषवा
सअनयासदासकरिलीनेंकेसोराइजियजपपप
बीनेहैं॥ मोहनकेतनमनमोहिवेकौंमेरीभटमेरेमु
षसकहीअनंतनवतलीनेहैं॥३७॥श्रीकृस्नकोवि
लासहाव॥ जिननतनिहारेतेनिहारेतनिहारिवेकौं
काहूननिहारेतेनकैसेंकैनिहारेहैं॥ सुरनरनाग
नवकन्यानकेप्रांनपतिपतिदेवतानिहूकेहिय
नविहारेहैं॥ इहिविधिकेसौराइरावरेअसेषअंग
उपमानउपजीविरंचिपचिहारेहैं॥ रूपमदमोचन
मदनमदमोचनेहैंतियमदमोचनकिलोचनतिहा
रेहैं॥३८॥अथकिलकिंचितहाव॥दोहा॥श्रमअ
भिलाषसगर्वताक्रोधहर्षभयभाव॥ उपजतएक
हिसमैजहांसोकिलकिंचितहाव॥३९॥श्रीराधी

१५ जूको किलकिंचितहाव॥ कौंन रसै बिहसै लषि
कौंन्हा हिका परकोपि कैं भौंह चढावै॥ भूलि तिला
ज भटूकै कब हूं कब हूं मुष अंचल दै इदुरावै॥ कौनकी
लैति बलाइ बलाइ ल्यौ तेरी हंसाइ हमोहि न भावै॥
ऐसी बलकब हूं न भई अब तो हि दई जिनि बाइ लु
गावै॥ ४० ॥श्रीकृस्नजूको किलकिंचितहाव॥ ऐ
सी है गोकुलके कुलकी जिनि रछिनि नैंनकोरे अनु
कूले॥ षंजन से मृनरंजन के सब हार बिहार लताल
गिकूले॥ बोलैं तुकैंर कैरु कोउ न बोलैं फिरै बिनुके
से हिरमहि फूले॥ रूप भरु सबके बिस से अहो कां
न्हकहौ रसकौंनकै भूले॥ ४१ ॥अथबिछित्तलछि
न॥ भूषनभूषितकोजहा होइ अनादर आनि॥ तिहि
बिछित विचारि सकेसव दास बषांनि॥ ४२ ॥श्रीरा
धीजूको बिछित्तहाव॥ केसव आपनै भाइ सिंगार
सिंगार नहीं सिंगार हथ्याहीं॥ हजभूषननैं न निभू
षे हैं जाके सुतापै सिंगार उतारिन जाहीं॥ सबही सुस
गंधनि हीं ते सुगंध सुगंध सुगंध में जात समाहीं॥
भूषन हैं सबतो हीतें भूषितभूषननैं तुमभूषित ना
हीं॥ ४३ ॥श्रीकृस्नको बिछित्तहाव॥ पांननषान
न पागरची पल टेपटचित्रकहाधारि कैं॥ कंठसिरी
बनमाल मनोहरहार उतारि धरे अरि कैं॥ चंदन
चित्र बिचित्र तिलोपि सुलोचन लोलन सौं लरि
कैं॥ अंगरसु भाइ सुबास प्रकासित लोपि हौ केस
व केसौं करिकै॥ ४४ ॥अथबिछोकहाव॥ दोहा॥
रूपप्रेमके गर्ब तें प्रगट अनादर होइ॥ तहं उपजै बि
छोक रस यह जांनत सब कोइ॥ ४५ ॥श्रीराधीजू
को बिछोकहाव॥ आवत जानि कै सो इरही हरु से
हरि बैठे न जानि जगाई॥ साहसकै उरमध्यधस्यो
कैरु जागति रोम न की न विंपाई॥ नीवी बिमोचत राम
चैं कित उठी पहिचांनि रुकी बतियां कहवाई॥ बास १५

रगाइ गवारचरावतआवतहैं निससेजपराई ॥ ४६ ॥
श्रीकृष्णजूको बिब्बोकहाव ॥ एकसमैं इकगोपीसों
केसवकैसेंहूं हांसीकीबातकही ॥ जाकहतानरईत
जितहिकहाहमसोंरसरीतिनहीं ॥ कोप्रतिउत्तरदै
रसषीदुगअंसुवनकीअवलीउमही ॥ छरलाइलैअ
कुलाइतनउअधरानिकलौंहिलकीनरही ॥ ४७ ॥ अथ
मोटायतहाव ॥ दोहा ॥ हेलालीलाकरिजहांप्रगटित
सात्विकभाव ॥ बुधिवलरोकतसोभिजेकहिमोटाय
तहाव ॥ ४८ ॥ श्रीराधाजूकोमोटायतहाव ॥ षेलत
हैं हरिबागेवनेंतहांवेठीप्रियप्रतितेंअतिलौंनी ॥ के
सवकैसेंहूंपीठिमेंडीठिपरीकुचकुंकुमकीरुचिरौं
नी ॥ मातसमीपदुराइभलेजिनसात्विकभावनकीग
तिहौंनी ॥ हरिकप्तरकीधूरिबिलोचनलैघिसिरो
रुहऔंठीउठौंनी ॥ ४९ ॥ श्रीकृष्णकोमोटायतहा
व ॥ भोजनकेउपभांनसभांमहिवेठहैंनंदसहासपका
री ॥ गोपघनेंबलवीरवंवैरजनषौवनाइविराजिरिषा त
री ॥ राधाजूरंगावकीफिरोषनिहैकहिकेसवरीफिगिरेहैं
बिहारी ॥ सोरभसें समुझैसबकुंचेहरवाइकहीहरिलागी
सुपारी ॥ ५० ॥ अथकुट्टमितहाव ॥ केलिकलहमेंसोभि
येकेलिकपटकटुरूप ॥ उपजतहैतहकुट्टमितहावकं
हतकेहतकविभूप ॥ ५१ ॥ श्रीराधाजूकोकुट्टमितहा
व ॥ पहिलेंहहिठिहूठिचलीउठिपीठिदैमैं चितईसषितें
नलषीरी ॥ बाइधरैं हरिजूकीभुजांनितेंछुइवेकोंवकु
भौंतिरुषीरी ॥ कुचपीडनदंतनषछतलैवनेंवरिनि
कीमरजाइहनषीरी ॥ ताहीकोंपांनषवैंवतिहैउलटी
कछुप्रीतिकीरीतिसषीरी ॥ ५२ ॥ श्रीकृष्णकोकुट्टमि
तहाव ॥ देषतहीजिनमोंनगहीअरुमौंनतजीकहवो
लउचारे ॥ सौंहैंकीसहनसौंहैंकीयोमनुहारिपरेपन
सूधेनिहारे ॥ हाहाकेहारिरहेनंदनंदनपांयपरेजिनि
लातनिमारे ॥ मांडतहैंसुषताहीकोंअंकलैहैंकेछुपेम
केपावननारे ॥ ५३ ॥ अथबोधकहाव ॥ दोहा ॥ सूछम

वेकाबोधजहांकेसवश्रौरहिहोइ ॥ तासौंबोधकहतसव
वकहतसयानेंलोइ ॥ ५४ ॥ श्रीराधाजूकौबोधकहा
व ॥ बैठीहुतीवृषभांनकुमारिसषीनकीमंडलीमं
डिप्रवीनी ॥ लैकुम्हिलांनौंसौकंजपरीइकपाइनिश्रा
निगुवालिनवीनी ॥ चंदनसौंछिरकेपावहिवाकहिपें
नहेमकनंनौंरसभीनी ॥ चंदनचित्रकपोलनिलेपिकैं
अंजनश्रांजिविदाकरिदीनी ॥ ५५ ॥ श्रीकृस्नकोबोध
कहाव ॥ सूषिसोभितगोपसभामांहिगोविंदवैठेहुतेदु
तिकौंधरिकैंजनुकेसवपूरनचंदलसैंचितचारुचकौ
रनकेहरिकैं ॥ तिनकौंउलटोकरिश्रांनिदीयोकहुनी
रजनीरजलभरिकैं ॥ कहिकाहेतैंनेकनिहारिमनोह
रफोरिदयोकलिकाकरिकैं ॥ ५६ ॥ राधाराधारवनके
कहेजथामतिहाव ॥ ढीठ्योकेसवदासकोछमिजि
हुकविकविराव ॥ ५७ ॥ इतिश्रीमनमहाराजकुमारश्री
इंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायांहावभावव
र्ननंनामषष्टमप्रभावः ॥ ६ ॥ अथअष्टनाइकाव
र्नन ॥ दोहा ॥ एसवजितनीनाइकावरनीमतिअनुसा
र केसवदासवषांनियेतेसवश्राठप्रकार ॥ १ स्वाधीन
पतिकाउत्काबासकसज्जाबांम ॥ अभिसंधितावषां
नियेंश्रौरषंडितानाम ॥ २ केसवप्रोषितप्रेयसीलषो
विप्रलब्धजान ॥ अष्टनाइकाएसकलअभिसारिकाछ
जांन ॥ ३ ॥ अथस्वाधीनपतिका ॥ केसवजाकेगुनवंध्यो
रहारहैपतिसंग ॥ स्वाधीनपतिकातासकौंवरनतयाइप्र
संग ॥ ४ ॥ प्रछंनस्वाधीनपतिका ॥ केसवजीवनिजो
वजेकौउनिजीवहूतेअतिवापहिभावे ॥ जापरदेव
श्रदेवकुमारनिवारतमाइनवारलगावें ॥ ताहरिपैंल
गवारकीवेदीमहावरपाइऊवाइदिवावै ॥ मैंतोवचौश्र
वहातिनहीअसैंश्रौरजोदेषेतोउतरश्रावे ॥ ५ ॥ प्रका
सस्वाधीनपतिका ॥ वोलीकोसैपानमोहिकरतेस
वारिकैईमुकरज्योंतोहीमहिमूरतिसमानीहै ॥ तेही राम
तियदेवतापेयायोपतिकेसोराइपतिनीवहुतपतिदेव २६

तावषांनीहै ॥ तेरेमनोरथ्थभौंरथकैंपाछैंपाछैंडोलतगु
पालमेरैंगंगाकैसौपांनीहै ॥ ऐसीवातकैंानजुनमांने
सुनिमेरीरांनीउनकैतौतेरीवानीवेदकीसीवांनीहै
ई ॥ अथउत्का ॥ दोहा ॥ कौंनहिहेतनआवईप्रीतम
जाकेधांम ॥ ताकौंसोचतिसोचजियकेसवउत्कावांम
॥ ७ ॥ प्रछंनउत्का ॥ किधौंग्रहकाजकिधौंछुआनसखा
नमाजकिधौंकछुअजउनवासरविभाततेंदीनौंतेंनसो
धकिधौकाहूसांभयोविरोधउपज्योप्रवोधकिधौंउरअव
दाततें ॥ सषमेंनदेदुकिधौंमोहूसांकपरनेहकिधौदे
ष्योमेहुअतिडरेअवरातते ॥ किधौंमेरीप्रीतिकीप्रती
तिलेनकेसौरारअजहूंनआयमनसोधौंकौनवात
तें ॥ ८ ॥ प्रकासउत्का ॥ सुधिभूलिगईभुलाकिकका
हूकिंभूलेईडोलनवारनपाई ॥ भीतमपकिधौंकेसवका
हूसौंभेटभईकोऊभांमिनिभाई ॥ आवतहैंकिधौंआयग
एकिधौंआवहिंगेसजनीसषदाई ॥ अमननंदकुमारस
षीसुधौंकौनविचारअवारलगाई ॥ ९ ॥ अथवासकस
ज्जा ॥ दोहा ॥ वासकसज्जाहोइसोकहिकेसववसविला
स ॥ चितवैरतिग्रहद्वारत्यौप्रियआंवनकीआस ॥ १० ॥
प्रछंनवासकसज्जा ॥ चंदनविरपवपुकोमलअमल
दलवलितललितलतीलपरीलवंगकी ॥ केसौदास
सी तामैंदुरीरीपकीसिषासीरीदुरावतनीलवासदुति
अगअंगकी ॥ पौंनपांनपंछीपलवासमेंसवरजित
तितनिचौंकिचौंकिचौंहेउयसंगकी ॥ नंदलालआ यो
गमविलोकिकुंजजालवालवीनीगतिनिहकाल
पंजरपतंगकी ॥ ११ ॥ प्रकासस्वाधीनपतिका ॥ भाष
तिहैसषवैनसषीनिसौंलाषहियेंअभिलाषनिजोहै
कोमलहासनिनैनविलासनिअंगसुवासनिकैम
नमोहै ॥ मूरतिवंतकिधौतुलसीतुलसीवनमेंरति
मूरतिकोहै ॥ कुंजविराजतगोपवधूकमलाजगके
जकुरीमहिसोहै ॥ १२ ॥ अथअभिसंधिता ॥ दोहा ॥

+कहा आतुहे॥एसे प्यारे वा पहले मान्योन+७

१७ मानमनावनहूकैहै मानहूकौ अथमान ॥ इनोंदुषतिनवि
नलहै अभिसंषितावषान ॥ १३ ॥ प्रछन्नअभिसंषिता ॥
बारबारबोलेजबबोल्योनबुलायतबबालकज्यौंबौलिवे
कौंकतविललातुहे ॥ ज्यौंज्यौंपरोपाइंतौत्यौंयांहनतैपा नि
नभयोहोतकहाअबकीनेंमोषनसोमगातुहे ॥ केसो
रासबछाडिकीनोंहठहासौहितुताहूछाडिजियजि
सेंविनुमनोसेंनवछेसौतोहिपूछिएजपीछेंपछिताउ
हे ॥ १४ ॥ प्रकासाभिसंषिता ॥ पाइपरेंहूनेप्रीतमत्योंक
हिकेसबकेपांहूंनमैंडुगरीनी ॥ तेरीसषाासिषसीषीन
एकउरोषहीकोसिषुसीषिमैंलीनी ॥ चंरनेंचंदसरोज
समीरबरैदुषदेहभईसुषहीनी ॥ मेउजरीजुकरीवि
धिमोकहुंन्यायनहीउलरीविधिकीनी ॥ १५ ॥ अथ
षंडिता ॥ दोहा ॥ आवनकहिआवेनहीआवेप्रीतम
प्रात ॥ तासौंकहिसषंडिताकहैरोषसौंवात ॥ १६ ॥ प्र
छन्नषंडिता ॥ आषिनजौलरतनकाननतौसुनियत
केसौराइजैसौंनमलोकमध्यगासहै ॥ वंसकोविसारी
लषिकाकज्यौंचुननफिरेजूठेसीठेसीथसर्दडठीठ
एहो हूरिहूरिकरतहीहैरिरोरिगहैपाइंजानौंनकुठे
रठौरजानिजियपाएहो ॥ काकौघरघालिवेकौंकहांव
सेघनस्यामघूघूज्योंघुमतप्रातमेरेघरआएहो
॥ १७ ॥ प्रकासषंडिता ॥ आजकछूऔपियांहरिऔरै
सीमानौंमहाउरमाहरंगीहै ॥ मोहनमोहीसीलगतमो
हिइनेपरमोहनमोहिलगीहैं ॥ मेरीसौमोसइूमानइ
वेगिहियैंरसरोसकीरीतिजगीहैं ॥ मेरेवियोगकैंनेजित
वीकिधौंकेसबकाहूकैपेमपगीहैं ॥ १८ ॥ अथप्रोषित
प्रेयसी ॥ दोहा ॥ जाकौप्रीतमरेअवधिगयोकौंनहुका
ज ॥ ताकौंप्रोषितप्रेयसीकहिवरनतकविराज ॥ १९ ॥
प्र ॥ छन्नप्रोषितप्रेयसी ॥ केवेसेकैसेहूपरवपुन्यमिलो
मनभावतौभागभस्योरी ॥ जानेकोमाईकहाभयोके राम १७
हूंजोऔषिकीआधीकघोंमरस्योरी ॥ ताकहतन्नअजोह

सिवौलैजउमेरौमोहनपायपाइपस्यारी॥ काठहूवेंहठ
तैरौकैठौरहैतेविरहानलहूंनजस्यारी॥२०॥ प्रकास
प्रोषितप्रेयसी॥ औधिदैआसउहांउनमैंयहभोजन
लैआवहीहमऔहैं॥ ताकहतेआवलौंवहराइकैं राधाव
रायमरूकारिमेंहै॥ वेठेकहाइनकीठिगकेसवजाहुनहीं
कोउजाइजुकैहै॥ जोनतिहोउनआंषिनतेंअंसुवाउ
मेगेंपुनिकेसेंकैरहै॥२१॥ अथविप्रलब्धा॥ दोहा॥ हू
तीसौंसंकेतवदिलैनपठाईआय॥ लब्धाविप्रलजानि
येंअनआयेंसनाय॥२२॥ प्रछंन्नविप्रल॥ सूलसेफू
लसुवासकुवाससीभाकसीसेभएभौंनसभागे॥ केस
कूवागमहावनसौजुरसीचठीजौन्हसवेंअंगदागे
नेहूलग्याउरनाहरसौनिसनाहघरीकुकहूंरेगरागे॥
गारिसेगीतविरीविससीसगोरहैसिंगारअंगारसेला
गे॥२३॥ प्रकासविप्रलब्धा॥ देषनउदृषिजोनरहिरेषि
निजगातचंपककेपानकछुलिष्यौहैवनायके॥ स
कलसुगंधठारिहूतिकाकौंमारिपुनिफूलमालाते
रिउारिवीरीवगराइकैं॥ लैलैरहिमासतजिविविषि
विलासआसकेसोहासहैउदासचलीअकुलाइकें
सेहकेंसंकेतसदनौंकौंन्हअसौंकोलिउनौंमोसौक
रिजोरहनौंहूनौंदुषपाइकैं॥२४॥ अथाभिसारिका॥
हिततेंकैमदमदनतेंपियसौंमिलैजुजाइ॥ सोकहि
जेअभिसारिकावरनौंविविधविनाइ॥२५॥ स्वकीया
कोअभिसारु॥ दोहा॥ अतिसलज्जपउगमगधरति
कि वंधवधुनिकेसंग॥ स्वयाकौअभिसारयहभूषनभूषि
तअंग॥२६॥ जनीसहेलीसोमिलवंधवधूसंगचारु
मगमेंदेईवधाइपगकुलटाकौअभिसारु॥२७॥ चकि
तचित्तसाहससहितनीलवसनजुतगात॥ कुलटा
संध्याअभिसरैउत्सवतमअधरात॥२८॥ वहूंवोरचि
तवेहसेचितवोरैसविलास॥ अंगरागरंजितरनितभू
षनभूषितवास॥२९॥ कुलुमकहुकरमंरगतिसिंक

१८ सषीसंगवाजारसषीसहेलीसाथहैकेवारिनारिअभि
सार ॥ २० ॥ प्रछंन्नप्रेमाभिसारिका ॥ लीनेंहममोलअ
नबोलेंआईजांन्योमोहमोहिघनस्यांमघनमालावे
लिल्याईहै ॥ देष्योहैहेदुषजहांदेहहूनदेषीपैरैदेषी
कैसैंवारकेसौदामिनीदिषाईहै ॥ उचेनीचेबीचकी
चेकटकनपीरपगसांहसगयंदगातिअतिसुषदाईहै
भारीभयकारीनिसनिपटअकेलीतुमनांहीप्रांन
नाथसाथप्रेमजुसहाईहै ॥ २१ ॥ प्रकासप्रेमाभिसा
रिका ॥ नैंननिकीअतुराईबेननिकीचतुराईगात
दु कीगुराईनदुरतिहैंतिचालिकी ॥ आपनेचरित्रनि
केचित्रनीविचित्रचितचित्रनीज्योंसोहैसाथपुत्रिका
गुवालिकी ॥ चंदकेसमांनचारुचाइसौंचढीफिरतिक
रिकैंनिहारेमृगनैंननिकीपालिकी ॥ कीजेपयपांनु
अरुषेजैपांनप्रांननाथआईहेंजुआईअलवेलीग्वा
लिकालिकी ॥ २२ ॥ प्रछंन्नगर्वाभिसारिका ॥ लीडि
लीलिलीकलेरीलुरीकहुलाललुकेकहाअंगन
गाइकै ॥ आजतोकेसबकैसेंहुकैलंगलागनदेतिन
देषहुआइकै ॥ वेगिचलोठठिआईलिवांदनदोरि
अकेलीयहौंअकुलाइकै ॥ भूलिहैगोकुलगांउमेगो
विंदकीजेगहूरनगाइचराइकैं ॥ २३ ॥ प्रकासगर्वाभि
सारिका ॥ चंदनचढाइचारुअंबरकोउरहारसमन
सिंगारसोहेआंनदकेकंदज्यों ॥ वीरेंकोरितिनाथ
बीनामेंवजावैगाथमृगगजमरालसाथवांनीजगर्व
दज्यों ॥ चौंकिचौंकिचकईसीसौंतिनकीहूतीचलीसौं
तिभईदीनअरविंदहुतिमंदज्यों ॥ तिमरवियोगभूले
लोचनचकोरफूलेआईव्रजचंदचंद्रावलिचलिचंद
ज्यों ॥ २४ ॥ प्रकासकामाभिसारिका ॥ गोपवडेवडेवैठे
अथांइनिकेसबकोरिसभाअवगाही ॥ षेलतवाल
कजालगलीनिमेंवालविलोकिविलोकिविका राम
ही ॥ आवतिजातितुगाइचिहूंदिसिधूंधरमेंधिहिवां १८

[illegible]

नतछांहीं ॥ चंदसौं आंननकैंठिकहांचली सरूतिहैक
छुतोहिकनीहीं ॥ ३५ ॥ केसवदास सतीनिविषिकही
सकीयानारि ॥ परकीयाहै भांतिपुनिआठआठअ
नुहारि ॥ ३६ ॥ उत्तम मध्यम अधम पुनितीनितीनि
विधिजांनि ॥ प्रगटतीनिसैसाठितियकेसवदासब
षांनि ॥ ३७ ॥ अथउत्तमनायकालछिन ॥ मांनके
रैरूपमांनतेंतजैमांनतेंमांन ॥ पियदेषैसषउपजै
ताहिउत्तमाजांनि ॥ ३८ ॥ होइकहाअबकेसमुझेंस
मुझेंनतवैंजवहेंसमझाये ॥ एकहीवंकविलोकनि
मांहअनेकअमोलविवेकविकाये ॥ जांनपनोंनज
नावहुजुजननमावधिलैौंउनिजांनिहैंहीपाये ॥ वातें
वनाइवनाइकहाकहौलैंहुमनाइमानाइतौआये
॥ ३९ ॥ मध्यमानइका ॥ मांनकरैलघुदोषतेंछोडै
वहुतप्रनाम ॥ केसवदाससवषानियेंताहिमध्यमा
वाम ॥ ४० ॥ भूलैंहूंसषैनहींवितयोपीनचोन्हकी
पैलविलालचकैतो ॥ हाहाकेहारिपरेंपुनिकेसव
पाइपरैंतेपरैंरहैतो ॥ होंतोयहैतवहींकीविचार
तहोतगुमानकैपायाहीतेएतो ॥ लोवीलैंरैंअरूप
नरीदेहजोनैकवडीविधिआंषिनिदैतो ॥ ४१ ॥ अ
धमा ॥ रूठैवारहिवारजोरूठैवेहीकाजताहीसोंअ
कृ धमासवेकहिवरनतेंविराज ॥ ४१ ॥ काहूंकपदजो
कान्हसौकीजेरीवातोवैवोलकुवोलकसाई ॥ फा
रेसोपूंघटओटअरेसोईहीदि[illegible]रीअपकोंजो
धलाई ॥ केसवअैसीसवीनकोमागोसिषकेकैहित
कीजुहसाई ॥ वारहीवारकोरूसनोंवा[illegible]वहीसोवुधिवियोग उं
वसाई ॥ ४२ ॥ इहविधिनारकनाइकावरनिसहितविवेक
व जातिकालतेंभावतेंकेसजांनिअनेक ॥ ४३ ॥ तजितनु नी
संवंधकीजांनिमित्रहिजराज ॥ दिषिलैदुरवदेषतेंता रू
कीतियसोंभाज ॥ ४४ ॥ अैविकवरनअरूअंगघरिअंत
जननकीनारि ॥ तजिविषवाअरूपूजितारमियहुरासि
कविचारि ॥ ४५ ॥ रहसंभोगसिंगारकीकेसववरनीरी

नि ॥ विप्रलंभसिंगारकीरीतिकहैंकरिप्रीति ॥ ४६ ॥ इति
श्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचितायांरसिक
प्रियायांनवरससवर्नमेंनामसप्तमप्रभावः ॥ ७ ॥ अ
थविप्रलंभसिंगारलछिन ॥ दोहा ॥ बिछुरतप्रियाजु
प्रीतमहिहोतजुरसतिहिठौर ॥ विप्रलंभसिंगारकौंहि
वरनतकविसिरमौर ॥ १ ॥ विप्रलंभकेभेद ॥ विप्रलंभ
सिंगारकैचारिप्रकारप्रकास ॥ प्रथमपूर्वानुरागपु
निकरुनामानप्रवास ॥ २ ॥ अथपूर्वानुराग ॥ देषतही
दुतिदंपतिहिउपजिपरतअनुराग ॥ बिनदेषेंदुषदेंबि
नसोपूर्वानुराग ॥ ३ ॥ श्रीराधाजूकोप्रछन्नपूर्वानु
राग ॥ फूलनदिषाउसूलफूलतिहैंहरिबिनुहरिकेरिमा
लवालव्यालसीलगतिहैं ॥ चउरवलाउजिनबिजनोहू
लाउलोगकेसवसुगंधवाउवायसीलगतिहैं ॥ चंदनचढा
उजिनतापसीचढततनकुंकुमनलाउअंगआगिसीलं ट
गतिहैं ॥ बारबारबरजतिबावरीहैबारेअंगनिबारीनषबा
उवारिविससीलगतिहैं ॥ ४ ॥ श्रीराधाजूकोप्रकासपूर्वा
नुराग ॥ केसवकौसैंहूंईठिनराठिहेडीठिपरेअतिईठक
न्हाई ॥ तादिनतेंमननमेरेकौंआनिभईसभईकहाकहौंहूंन
जाई ॥ होइनहांसीजोआवैकहूंकेहिजानिहितअबतु
गनआई ॥ कैसौंमिलैंरीमिलेंबिनक्यौंरहौंनैननिहैं
तहियेउरमाई ॥ ५ ॥ श्रीकृस्नजूकोप्रछन्नपूर्वानुराग ॥
एकसमैंवृषभांनसुतासजनीगननैंमेंजननीसंगपैसी
जोतितन्हेंचितयोतिहिरीतिसप्रीतिहियेंकहिजातन
तैसी ॥ तादिनतेंजगकीजुवतीनकौलागतिकेसवभां
तिअनैसी ॥ चाहिफिरयोचितचक्रवतुन्नकहूंदुतिदे
षियेवासुषकैसी ॥ ६ ॥ श्रीकृस्नजूकोप्रकासपूर्वानु
राग ॥ भांतिभलीवृषभांनललीजवतेंअंषियांअंषी
यांनिसौंजोरी ॥ मोंहचढाइकछूउरवारदुलाइलईजि
यजानिकैंभोरी ॥ केसवकाहूत्योंतादिनतेंनचितैके
नविलोकनिकेतोनिहोरी ॥ लीलतिहैसवहीकेसिं
गारअंगारनिज्योंचितवैचकोरी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अवलो
छिन

कनिआलापतेमिलिवेकौंअकुलाइ॥ होतदशादस
बिनमिलेंकेसवबैयाँलहिजाइ॥८॥ अथदशदशा॥
अभिलाषसुचिंतागुनकथनस्मृतिउद्वेगप्रलाप
उन्मादव्याधिजड़ताभयहोतमरनपुनिआप॥९
॥अभिलाषलछिन॥ नैंननवैंनमनमिलिरहेचोहै
मिल्योसरीर॥ कहकेसवअभिलाषयहवरनतहैंक
विधीर॥१०॥ श्रीराधीजूकोप्रछंन्नअभिलाष॥ सुषि
बुषिघरीदुतिदेहमिरीदिनहींदिनचाहतिवाढति
सी॥ कछुकेसवआपनेपेटकीपीरदुरावतिपैसुषका
ढतिसी॥ विसरयोसबभूषसखीनिसनीरपरीचि
तचाहतिआठतिसी॥ गयोकछुगांठितेंछुटिछवी
लीसकाहेतेंडोलततडाठतिसी॥११॥ श्रीराधीजूकौ
प्रकासअभिलाष॥ जौकहूंदेषेंलगेदिषसाधदिषा
वेनहीदिनंहीदुषपेहौं॥ याहीमेंकेसवदेषियेवाल
नदेषिवेदेषिसषीअबकेहौं॥ योउनकौंदुरिदेषिहौं
देइज्यौंआपनौंदेहुनदेषनदेहौं॥ देषिवेकोंवहराव
नमोहिसवैहौंवकहाकछुदेषिहुसेहौं॥१२॥ श्रीकृस्न
कोप्रछंन्नअभिलाष॥ पाइपरौंवलिजांउमनोहरआ
पनसौंनकरौअवताहू॥ देषेअघातनहीदिनकौंपि
रिवारकुपीअनदेषेंहीजाहू॥ मोसौंकहीसुकहीअव
केसवकैसेंहूकांन्हपत्याइहुजूकाहू॥ ऊठदुगेजुगहे
विनुधीरजतातौहैनेकसिराइनयाहू॥१३॥ केसव
मैंनसौनैंननिलागेहीभूरुहपेमअदिष्टवठावै॥ वैपा
वहकामलताअवलंवेसतोमनछूटउपायनपावै॥
कीजेकृपाहौषिराजेवुधासयोराषिकाकेउरमेंउपहैप
जोआवै॥ लागतिज्योंकवहूंसुहवारकज्योंमुहूसौंमु
हआनिलगावै॥१४॥ श्रीकृस्नजूकोप्राकासअभिलाष
॥ हैकोउमाईहितूइनकीयहजाइकहैकिहवाववहैहैं
ज्याइहीकेसवगोकुलकीकुलदाकुलनारिननोउल
हैहैं॥ देषिरीदेषिलगाइदगाइजसौनैंसेनाइकचाहिरहै
हैं॥ कौहैरीकोजैसैंजाननितिनांहिनकाहिहीकाकेसदे

पे

१० सकहेहैं॥१५॥अथचिंता॥कैसेकैमिलिहौंमिलेहरिकै
सेंवसिहोइ॥इहचिंताचितदेतिकैंवरनतहेसबकोइ
॥१६॥श्रीराधीजूकीप्रछंन्नचिंता॥आपनतूसेतन
आपनोहोतनदेषेजाहि॥आपनहीतेआपनोकोम
नकरिहेताहि॥१७॥श्रीराधाजूकीप्रकासचिंता॥प्रे
ममयप्रूपरूपसचिवसंकोचसोचविरहविनोदपील
पेलियतपाचिकें॥तरलतुरंगअवलोकनिअनेगग
तिरथमनोरथरहेपैरागुनेगचिकें॥दुहूंछेंरपस्योजो
रघोरघनोकेसोंरासहोइजीतिकौंनकीकोहारैहि
यहचिकें॥देषततम्हेगुपालतिहिकालउहिबाल
उरसतरजकीसीवाजीरावीरचिकें॥१८॥श्रीक्रस्न
कीप्रछंन्नचिंता॥केसोंरासमकलसुवासकोनि
वासतनकहिकवभ्रकुटीविलासत्रासछोहिहैं
कैसोहैसदिनवडभागीअनुरागीजिहमेरेदृगवाके
संगलागीलागीडोलिहै॥ऐसीहैकहैहैसपुनिअपने
करछन्दगमरधनसारसममेरेउरओलिहै॥दीप
केसमीपनिसिरीपतिविलोकैवहचित्रकीसीपु
तरीसुकंपोंहूंहांसिवोलिहै॥१९॥श्रीक्रस्नकीप्रका
सचिंत॥॥राधिकाकौजननीहीकेकौननिकोउस
सधा पंवरवानेंचेलोवें॥देवकुमारसेगोपकुमारनिमान
देदेहषभानवुलावै॥केसवकैसेहूंवालभलीवह
मालसुमेरेंहीयेपहरावे॥तोहिसघीसमदेसंगता
कैंसुक्योंयहवामसवेवनिआवै॥२०॥अथगुन
कथन॥दोहा॥जिहगुनगनगनिदेहदुतिवरनत
वचनविसेष॥ताकुंजोनहुगुनकथनमनमथमं
त्रसुलेष॥२१॥श्रीराधिकाकोप्रछंन्नगुन॥कीरति
सहतनिनकेसवकुवरकांन्हकेवलअकीरतिन्रपति
सोममांनियें॥छुवतवंपकपातकुम्हिलातजातगा
तअतिहरषितनतेनहरिजूकोजानियें॥कोमलसुवा
हुजुतप्यारेकेपरमपांनिकंटककलितनालनलिन राम
वषांनियें॥लोचनविसालचाहमदनगुपालजूकेम २०

इनसुर निरसनरसहांनियें ॥ २२ ॥ श्रीराधिकाजूकौ प्रका
सगुनकथन ॥ षंजनहैं मनरंजनकेसव रंजनेनैंन
किधौं मतिजीकी ॥ मीठीसुधी किसुधाधरकी दुतिदंत
नकी किधौं दाडिमहीकी ॥ चंद्रमलौमुषचंद किधौंसर
षिसूरति कांमकिकांन्हकीनीकी ॥ कोमलपंकजकेके
पदपंकजप्रांन पियारेकीमूरति तीयकी ॥ २३ ॥ श्रीकृस्नजू
कौ प्रछंन्नगुनकथन ॥ जोकहूंकेसवसोमसरोजसु
धासर भृंगनि देहदहेहैं ॥ दाडिमकेफलश्रीफलविद्रुम
हाटककोटिककष्टसहेहैं ॥ कोककपोतकरीअहिकेह
रिकोकिलकीरकुचीलकहेहैं ॥ अंगअनूपमवानिय
केउनकी उपमाकहिवेरहेहैं ॥ २४ ॥ श्रीकृस्नजूकौ
प्रकासगुनकथन ॥ लोचनवीचितुभीहविरामेकीके
सवकैसैंहूजात नकाढी ॥ मांनहुमेरेगही अनुरागहि
कुंकुमपंकसैंअंकितगाढी ॥ मेरीयलगिरहीतनवता
जुतुल्योंदुतिनीलनिचोलमैंवाढी ॥ मेरेहिमांनुहीय
कढुंसुघनयौं अरविंददीयेंमुषठाढी ॥ २५ ॥ अथस्मृ
ति ॥ औरकछूनसुहायजहां भूलिजातसवकांम
मनमिलिवेकीकामनाताहिस्मृतिहैनांम ॥ २६ ॥ श्री
राधीजूकौ प्रछंन्नस्मृति ॥ वोल्योसुहाइनषेल्योहस्यो
अरेख्योसुहाइनदुषवढ्योसो ॥ नौकीयेवातसुनेंस
सुहैनमुनौंमनकाहूकेमोहमढ्योसो ॥ केसवढूंढति
यौउरमैंमतिमूढभयेंगुनगूढपढ्योसो ॥ कोकरैसाज
वजांवेकोवीनहियाकौकछूचितचाकचढ्योसो ॥ २७
श्रीराधिकाजूकौ प्रकासस्मृति ॥ मेरेमिलाएहोपैंमि
लिहौमनमोहनसौमनुमोहिनदीजै ॥ मौनहिमौंन
वैनैनकछूअववैंमनआंनदकेरसभीजै ॥ ज्यैंसैंहीं
केसवकैसैंजियोंगीहौयांननषाटुजौयांनीनपीजै
जानिहैकोउकहाकरिहौतवसोचनजौतौसकोचन
कीजै ॥ २८ ॥ श्रीकृस्नजूकौ प्रछंन्नस्मृति ॥ घोरिघनै
घनसारसौंघनस्यामसवंदनछैतनल्यौ ॥ केसव

कुंजकोंकूलनिवितैप्रतिकूलभएसुभफूलनिफूलेंसो॥भू
लेसेडोलतबोलतहूंउतजातकितेमनसंभ्रमभूल्यो
जोंनतिहींयहकाहूकेआजमनोहरहारहिडोरनिकू
ल्यो॥२९॥श्रीकृस्नजूकोप्रकासस्मृति॥आसनवा
सनभयेविसकेसवडासनडांसनिकीगतिलीनें॥चंद
नचांहिनीत्योंचितचाहेनचंद्रिकाचंदचितेरसभी[illegible]
नें॥पाननषातनपांनकरैकछुहासविलासविराक
रिहीनें॥ऐसीहैगोकुलकेकुलकीजिनिगोकुलना
यकेसठंगकीनें॥३०॥अथउद्वेग॥दुषदायकहैजा
तनैंजहांसबसुषदायकआनपास॥सोउद्वेगरसातुसहूजान
हुकेसवदास॥३१॥श्रीराधीजूकोप्रछंन्नउद्वेग॥चंदनहीं
विषकंदहेकेसवराहयहीगुनलीलिनलीनों॥कुंभजयों
उनजांनिअपांउनमोरेंपीयोपविजाननदीनों॥यासों
सषाधुरसेषविषधरनांउपल्योविधिहेतुपिहीनों॥स
रसौंमींईकहाकहियहयापीजुआयवरावरिकीनों॥
॥३२॥श्रीराधीजूकोप्रकासउद्वेग॥केसवकालिहिवि
लोकिभजीउहआजिविलोकैंविनांसुमरैजू॥वासरवी
सविसैविसमीडियेराजिजुन्हाईकीज्योतिजरैजू॥पालि
कैतैंभूवभूमितैपालिकआलिकैरारिकलालिकैरैजू
भूषनेदेहुकछूहजभूषनदूषनदेहकोहेरिहरैजू॥३३॥
॥श्रीकृस्नजूकोप्रछंन्नउद्वेग॥मेघनिज्योंहसिहेतनि
हेरतिहूंसनिज्योंघनरूपनपावै॥कंजनिज्योंचितचंदन
चाहतचंदज्योंकंजनिकेपांहूनछीवैं॥लालतैंवागनिवाग
तैंलालनितालनतमालकीजातनसीवै॥कैसीहैकेसववैजु
वतीसनिऐसीरसाप्रियकीपलजीवै॥३४॥श्रीकृस्नजू
कोप्रकासउद्वेग॥सोचिसषीभरिलेतविलोचनकोपते
देषतफूलेतमालहि॥भूलेसेडोलतबोलतनाहिनवागग
तकिधौंतेरेहीलालहि॥देष्योजुचाहतिदेषनआवतिमै
मेंहौंनदिषांउरीलालहि॥आजकहारेषिसाथलगीजैदे
ष्योसहारकछूनगुपालहि॥३५॥अथप्रलाप॥भवतर

है मन भवर ज्यों है तन मन परिताप ॥ बचन के है पिय पछे सों
तासौं कहत प्रलाप ॥ ३६ ॥ श्रीराधाजू को प्रछन्न प्रलाप ॥
षेलन न[illegible]सी न षोरि अठा उन है तन नैं वैर ही येक पटो सौ ॥ लौं
नैंन नैरैं नौं हिला उभल्ला उन नौ तौ न गौ तौ कहा कहौं तो सैं
अं त्रिरयो हषमें दुष के सब कैसें हसौं री कहा कहि कोसैं
नि नैंन नीर मोरे कै हैं ग्वालि री देष्यौ तैं कान्ह कहा कह्यो मो सैं
॥ ३७ ॥ श्रीराधीजू को प्रकास प्रलाप ॥ अलीनि के मांझमि
ली दुती षेलत जो मने को कान्ह धौं आस कहां तें ॥ डीठि ही डी
ठि परयो न कछू सुठि ढीठि गही हठि पीठि की घांतें ॥ गई गा
डि लाज निही हिय हो नौ उठी जरि के सब कांपनी यांतें ॥ इती
रिस हैं नव वीक वहे सु रही वविये अंषिया नके नी तें ॥ ३८
॥ श्रीकृस्नजू को प्रछन्न प्रलाप ॥ नीलनि वोल दुराइ कपोल
विलोकत ही कीयो बोलि कै नौ ही ॥ जोंनि परी दृसि बो
लत भीत रि भागि गई अवलोकत मोही ॥ बूझि वे कीं जब
लागी है कान्ह हि केस वके न विरूप छिलौं ही ॥ गोरस कीसौं
ब वाकी सौं तो हि कि वार लगी कहि मेरी सौं को ही ॥ ३९ ॥ श्री
कृस्नजू को प्रकास प्रलाप ॥ मोहनी मरी विका सोहा सघ
न सार कौ सौ वा स सुष रूप की सी रेषा अव हात है ॥ केसो रा
स वैं नी तौ त्रिवैं नी सी वना इ सु ही जा मैं मेरे मनोरथ सुनि
से अन्हात हैं ॥ नेह उरझे से नैनं दे षिवे कौं विझै से विनकी के
सी भो हैं उन कै सैं उरजात है ॥ ऐसी सीवनाई विधि कौन
की है जाई वह तेरे घर आई आजु कहि के सी वात है ॥ ४०
अथ उन्माद ॥ दोहा ॥ तरकि उठै पुनि उठि चलै चितै रहै
चहु देषि ॥ सो उन्माद ज्यु गावई रोवै हसै विसेषि ॥ ४१ ॥ श्री
राधाजू को प्रछन्न उन्माद ॥ केसव चौंकत सी चितवै छ
ति या धरकै तरकै तकि छांहीं ॥ बूझि सषी अरु केहै सुदु ओरई
ओरकी ओरभई पल मांहीं ॥ डीठि लगी कि धौं वाइ लगी म
न भूलि परयो कि करयो कछु कांहीं ॥ घूंघट की घट की पट
की हरि आज कछू सुधि राधे कौं नांहीं ॥ ४२ ॥ श्रीराधाजू
को प्रकास उन्माद ॥ केसव सैतु हि सिद्ध हरि तैं मन विनु
विथा अगाधरापि कहि वाही ॥ छूटी लट लटकनि कटि तट

लैंकि बिनवति नी ठिडी ठिकरि ठाटी ॥ नरकनितनकि तोरति
तनुतनफति अति अपार उपचार नि ठाटी ॥ सकसकात
तिलैलै सास अवेतन्न चेनदुष मपेत गहि [illegible] ॥ ४३
॥ श्रीकृस्नजूको प्रछंन्न उन्माद ॥ गूढ अगूढ प्रकासि
तबातनि लोक अलोक की बातन सरासी ॥ रोवत हैं कब
हूं हसि गावत नांवत लाज की छांडि छरासी ॥ काहूं को
सोचसंकोच न केसवदेषति आवत देह मरासी ॥ बांम
कि बाइ कि कांम कि प्रेम कि है हरि की मति काहू हरासी
॥ ४४ ॥ श्रीकृस्नजूको प्रकास उन्माद ॥ ललजब
कितबितवतचितचहूं दिस चाहि बाहिरे है मुषचपल
चलत धाइ ॥ सोंचत से मनमन कों पतत पततन के सो
राइ रोवत हसत हठै गाइ गाइ ॥ चलहि हिषांउतो हि देषत
ही भय मोहि भयो सो कहन आई तो सों आलि अकुलाइ
जैसें केछु आकबाकबकत है आज हरितें सें जि निनाउ
मुहूका हूको निकसि जाइ ॥ ४५ ॥ अथ व्याधि तछिन ॥
अंगबरन बिबरन जहां अति उचेउसास ॥ नैननीर परि
ताप बहु व्याधि सुकेसवदास ॥ ४६ ॥ श्रीराधाजूकी व्या
धि ॥ वे नुत ज्योउनि वीन तें बोलैं न वेन बिलोके तउहि
भगी है ॥ वेन लै नेस सुनै नल बातहि प्रेतलग्यो किधों डी
ति जगी है ॥ केसव वे तो हिता हिर टेरटनौ हिइ ने उनही
न की लगी है ॥ वे भषें पान पानीन न लै तें कान्हठगे कित
को न्हि ठगी है ॥ ४७ ॥ श्रीकृस्नकी व्याधि ॥ कांउनकेतन
बा तापन तापिसघां इन के अंसे निअन्है स ॥ कांउन के उडिजे
उसासनि स्वांइन के उपचार जुडेस ॥ केसव बैन रसाल तुस
हषभांन लली पे निहांन नपैस ॥ एक हि बेरदुहूं नि कहां भ
यो माई री लवलि रेषिडेरै स ॥ ४८ ॥ अथ जडता ॥ भूलि
जाइ सुधि बुधि जहां दुषसुषहो इसमांन ॥ तासों जडता क
हत हैं ॥ केसवदास सुजांन ॥ ४९ ॥ श्रीराधाजूकीकु
अजडता ॥ षेरे तुपचारषरी सीयरा सियरे तें षराई षरे नन
छीजै ॥ ऐसे में औरकी येतें कहू उपजे तौ सके लि कैहा
हमलीजै ॥ देषत ही यह कांम कलीकु म्हिलीनी कै आ

कहा अब कीजै ॥ कौंन पै जात कहा करौं केसव कैसें जिये
यह क्यों हूं मन जीजै ॥ ५० ॥ श्री राधा जू को प्रकास जड़ता
॥ अंषियां निमिली साषियां निमिली पतियां बतियां नि
मिलीत जिसौं नैं ॥ ध्यांन विधान मिली मन ही मन ज्यों मि
लै रंक मनौं मन सौं नैं ॥ केसव कैसें हूं विगि मिलौ तन नैं कै
है उहै हरि जो कछु हैं नैं ॥ पूरन प्रेम समाधि मिलैं मिलि
जै है तु मैं हूं मिलि हैं नव कौं नैं ॥ ५१ ॥ श्री कृष्ण को प्रछंन
जड़ता ॥ पल ही पल सीतल होत सरीर विचारि सबै उ
पं पचार नि हैं नैं ॥ जो करि सतन मंडन षंडन चित्र कछू उ
ष सषन आं नैं ॥ केसव कांन्ह सनैं समुझै न हिए हू न जिस कौं
न हि को इह मांनैं ॥ जोग लियो कि वियोग है काहू कौ लोग
कहा इन रोग निजांनैं ॥ ५२ ॥ श्री कृष्ण को प्रकास जड़ता
॥ कांन्ह के आसन वासन हीन हु तासन मीत कौ आसन ।
कीजै ॥ केसव इंद्रिय साधि सबै मन साधि समाधि न के रस
भीजै ॥ जौ लौं भस्म हरि सिद्ध प्रसिद्ध न तौ लौं विलोकि अ
लोकन लीजै ॥ दे विकरै तप तौल गिवै वर दांनन जौ जिय
दांन तैऊ दीजै ॥ ५३ ॥ अथ मरन वर्नन ॥ दोहा ॥ वैनैं न
क्यों हूं मिलन जहां छलबल केसवदास ॥ पूरन प्रेम प्रताप
तें मरन न होइ अनयास ॥ ५४ ॥ मरन न केसवदास पै वरन्यौ
जाइ न मित्र ॥ अमर अजर जस कैहि कहौं कै सै प्रेम चरित्र
॥ ५५ ॥ रति उपजै रमनीन कैं पहिलें केसवदास ॥ तिन कौ
६ अगित देषि सषि करत सु पेम प्रकास ॥ ५६ ॥ अति आदर अ
ति लोभ तें अति संग तितैं मित्र ॥ साध निहूं के होत हैं केसव
वेवल वित्र ॥ ५७ ॥ सुभग दसा दस मैं कही उपजी पूरन राग
जिहि विधि उपजै मांन मन वरनौ सुनहु सुभाग ॥ ५८ ॥ इति
श्रीमन महाराजकुमार श्री इंद्रजीत विरचितायां रसि
कप्रियायां विप्रलंभ शृंगार पूर्वानुराग वर्ननो नाम अ
ष्टमः प्रभावः ॥ ८ ॥ अथ मान वर्ननं ॥ दोहा ॥ पूरन प्रेम
प्रताप तें उपजत है अभिमांन ॥ ताकी छवि के छोभ सौं केस
व कहियत मांन ॥ १ ॥ अथ मान भेद ॥ प्रगट हि पिय प्रति मांन

नीगुरुलघमध्यममांन॥प्रगटहिपिय [redacted] पियानिश
तिकेसवहासवषांनि॥१॥अथगुरुमान॥औरनारिकौ।
चिन्हलषिअरसनिश्रवननिनाउ॥उपजतहैगुरमांन
तहकेसवहासतभाउ॥३॥श्रीराधाजूकौचिन्हदरसन
गुरुमान॥सवैया॥आजमिलेवृषभांनकुमांरिहिनंदकु
मारविवियोगचितैकैं॥रूपकीरासिरस्योरसकेसवहास
विलासनिगोसरितैकैं॥वागेकेभीतरदेषिहिसैंनषनैंन
नवारहीसुरतैकैं॥फूलहीमेचंभ्रमभूलिमनौसकुचेस
रसीरहचंदचितैकैं॥४॥श्रीराधिकाजूकौप्रकासगुरुमां
न॥वूझतिहीउहगोपीगुपालहिआजकछूहसिकैंगुन
गाथहि॥ऐसमैंकाहूकौनांउसखीकहिकैंसषीआइग
योव्रजनाथहि॥षातषवावतहीजुविरीसुरहीमुहँकी ष
ष मुहँहाथकीहाथाहि॥आनरहैउनैनेननितेंऐसुवा
निकमेअषरानिकेसाथहि॥५॥श्रीकृस्नकौप्रछन्नगुरु
मांन॥ऐसीऐसीरतिराचेमोहनकेसाचेस्यांमदेषोआ
निवाविकिषोकौंनकीमचीठीहै॥सुनदुसभागपाईरा
वरीउपागमांहकागरकेरूपकोन्हआगिकीअगीठी
है॥जांनतिहौंयहीमगपायोहैजनमजगलोकमैंअलो
कनिकीवीथीतुमडीठीहै॥काहेकौंकहाउतकटुक
कालकूटसीएककैाहरिहरेहसिहमकौंतौमीठीहै॥
६॥श्रीकृस्नकौप्रकासगुरमांन॥लोकलीकउलंघि
कछुप्रियाकहेजवबैंन॥उपजतहैगुरमांनतवप्रीतम
केउरऐन॥७॥आपनैसौआपनैहीआगैंकहियतुकि
धौंधोरिकेषजांनेंघोरिनमैंबोलियतहै॥डीठियेतौरो
कियतजोरकहूंनाईकेसोऔरकहानैंनलेछुरीसौंछो
लियतहै॥वेईघनस्यांमजिनविनघरीघरनानघरीक
मेंघनैघनसारवोलियतहैं॥वोलतहैकैसेऐसेवोलै
जैसेवोलियतमोनहूलाएसैंऐसेवोलवोलियतहैं
॥८॥श्रीराधाजूकौप्रछन्नलघुमांन॥देषतकाहूनारिसौंदे
षेअपनेनैंन॥नहांउपजेलघुमांनकेसुनेसषायहवेन
॥९॥कूटेंहूनरूठिराईठसौंरतौकहावनैंकरैठरैनवीठि

इठकैं नकेअली ॥ कान्हिकेतैमोसेंघालिनंदलालल
लिकैरैकान्हिहीनआईग्वालिजैपेतहतीमली ॥ आ
गहीऔवाचपरीवाचपारिवौ।कैमाईआंनरंगआन
कं जियज्यांकेनरकीन्ली ॥ तेरेहीकहेकीकोअसाषिहेजू
वूझिपरीदेषिसजुआषिसाषिवूझिवेकीकाचली ॥
॥१०॥ श्रीराधाजूकोप्रकासलघुमान ॥ कान्हतिहारी
वातैंनप्रियाकेस्रवांनआंनसवैमनमांहीं ॥ मांनकि
धौंअयमांनअवैयहमांनसपेअतुमांनिनजांहीं ॥ सुष
दुषनकेसवजांनिपरैसुनेरसिहांसीनहांअहनांही
योछिनमेंसियराछिनतातीहैज्यांवदलैवदलानिकी
छांहीं ॥ ११ ॥ श्रीकृस्नकोप्रछंनलघुमान ॥ प्रियकेकाक
हेकरैनजहाप्रियाकौंनहीलाज ॥ उपजतहेलघुमा
नतहांवरनिकहैंकविराज ॥ १२ ॥ आगेकहाकारहोअ
वहीतोंइश्लौतोंदुहुरीनोकहोविनुकीनैं ॥ केसवकोन
हूंलाजकिलाडतेभूलिगईतोभईहितहीनैं ॥ मेरनहीभ
रिंअकलत्याभरिजीमनवोलेजुवोलनवीनैं ॥ देषन
हीकवहूभरिनैननिआजुहिंकैसैंचलेचितलीनैं
॥१३॥ कृस्नकोप्रकासलघुमान ॥ वोलिज्यांआवतेवो
लतनांहिनमोतैंकहाकछुचूकतिहारी ॥ केसवकैसेंहूं
देषैसवैनविनुजानेकहाकोंकुजीकोपिहारी ॥ वीरिसिरा
इनजानतवाइनईयहभूषकीरीतिनिहारी ॥ काषिहिरा
षहिवांहतवाच्योअअेतनकुंतमकुंजविहारी ॥ १४ ॥
राधिकाकोप्रछंनमध्यममान ॥ दोहरा ॥ वातकहतप्रिय
औरसांदेषेकेसवदास ॥ उपजतमध्यममानतहांमान
निकेसविलास ॥ १५ ॥ कहेकांन्हकहांसिगरीनिसिनासी
रवतोतमहींकहचाहतिही ॥ ततुमैंतनरेषलिषीकि
हिकेसवकंरककोनगाहतहीं ॥ कछुरातीसीआंषि
कहांभईतातीतिहारेवियोगकेदाहतहीं ॥ हियवंव
करीतिरचीजवरंचकलाइलईउरनाहतहीं ॥ १६ ॥ राधि
काकोप्रकासमध्यममान ॥ सषीज्योंतनकोंनुवका

२४ तिमोहूल्यांआईयकावनकेगरई ॥ अवपाहीतेंतोसडुवा
तकछूकहिवेहुकीतौनकहीपरई ॥ काहेकेसवआप
निजांघउघारिकेआपुहीलाजनिकोमरई ॥ इकतोस
वतेंहरसहरिहैंअवहौंहूंकहाहरिनेंहरई ॥ १७ ॥ कृस्न
कोप्रछन्नमध्यममान ॥ जहांनमानैमानिनीहारैपीउ
मनाइ ॥ उपजतमध्यममाननहीप्रीतमकेउरआइ ॥ १८ ॥
वारवारवरजोमेंसारससरसमुषीआरसीलैदेषितुषया
रसमैंवोरिहै ॥ सोभाकेनिहारेतेंनिहारतिननेकहूंते
हारिहैनिहारिसवकहाकाहूषोरिहै ॥ सुषकोनिहारोज
नमान्योसुभलीकरीतैंकेसोराइकीसोंअवजोतुमन
मोरिहै ॥ तोहकेनिहोरैंकिनमाननिहिनिहोरतिहोनेहके
निहोरेंफिरिमोहांजुनिहोरिहै ॥ १९ ॥ श्रीकृस्नजूको
अकारनमध्यममान ॥ मानहिमानतेंन्यांमानिनिके
सवमाननसतेंकछुमानटरैगो ॥ मानरैहैसजुमानोनही
परिमानुनषेअभिमानभरैगो ॥ कैहोसहेलीसमाननतेवे
जवसोतिनमेंअपमानकरैगो ॥ आपमनावनमानहि
रीवहरोजुमनावननोहिपरैगो ॥ २० ॥ दोहा ॥ राधाधी
रमनकेवरनेमानसमान ॥ तिनकोमानमनाइवोका
हिपतसनहुसुजान ॥ २१ ॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमा
रइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायांप्रछन्नप्रकासस्यं
गारविरहवर्ननंनामनवमःप्रभावः ॥ ९ ॥ अथमान
मोचन ॥ मानतजहिंप्रियतमप्रियाकहिकेसवकरिप्री
ति ॥ वरननिसुनतेंसुनहुसचजेमैसुनीपररीति ॥ १ ॥ सा
मदानभनिभेदपुनिप्रनतिउपेक्षामानि ॥ अरुप्रसंगवि
ध्वंससुनिरंडहोइरसहानि ॥ २ ॥ सामलछन ॥ दोहा ॥
जोकेयांहूमनमोहियेछूटिजाइजिहिमानु ॥ सोईसामउप
उकहिकेसवदासवषानु ॥ ३ ॥ श्रीराधिकाकोसामउपा
यकवित्त ॥ केसवदाससराकियेंआसरैहैसुषकीदुषना
हिनदीजै ॥ ताहूसोंरोसुनमानियेमानिनिभूलिहूंआ राम
नोमानिजुलीजै ॥ हौंतमहीतुमहौसुनिसंदरिसूर । २४

तिहींजियराकहिजीजे ॥ मानहैभेदकोमूलमहाअपनेस
हूंसिअपनेहूनकीजे ॥४॥ श्री क्रस्नकोसामउपाय ॥
कहिआवतिहैजुकहावतहौतुमनमाहिंतौताकिस
कैहमसोंहीं ॥ तिहिपैडेकहाचलिपेकवहूजिहिकों
सोलैगेपगयीरह्योहीं ॥ प्रीतिकुम्हैडेकीजेहैजईस
महोनतुम्हैअंगुरीयसरोहीं ॥ कीजेकछूयहजानि
कैकेसवहौतुमहींतमहैहौहरिहोहीं ॥५॥ अथदान
लछन ॥ दोहा ॥ केसवकोनहूंव्याजकछुदैजुछुडावै
मानु ॥ वचनरचनमोहैमनहितौसौंकहियेदान ॥६
जहींलोभनेहानुलैछोडैमानिनिमानु ॥ वारवधूके
लछनहिपावैतनहींप्रमान ॥७॥ श्रीराधिकाकोदान
उपाय ॥ कोमलअमलदलहीनेहैकमलभवअरुनमान
वसुनप्रभुजूकोसुषदाइये ॥ केसोदाससोभाधरस
धरसुधाकेधरेमधुरअधरउपमातोइनपाइये ॥ उरज
मलयसेलसीलसमसुनिरेषिअलकवलितव्याल
आसाउरआइये ॥ निपटनिगंधपहुहारजीववंधको
सोवाहतसुगंधभयोनेकश्रीवनाइये ॥८॥ कवित्त
मन्नगयंदनिसाघसहारहिघावरउत्तंगमजंतविदारयो
तारिनवेकहिकेसववेधनिवंधनकेतहुधाविविषिमा
रयो ॥ सोअपराधसुधारनसोषिहियेइहिसाधनुसाधवि
चारयो ॥ पावनपुंजनिहारिहियेंअवगाहतहैयहहारसँ र
विहारयो ॥९॥ क्रस्नकोदानउपाय ॥ हसतहसतआ
ईआनिएकगाथागाईकिहौधौंकन्हाईयाकोभावस
मुझाइकै ॥ पीवैकोअधरमधुरपतिएकहाचाररदन
करजघतदीजैवताइकै ॥ पहुपपरिरंभनकहावैकौन
केसोराइमेरीसौंजोमोसोतनराषहुदुराइकै ॥ राधिका
कीअधिकाइकहाकहौलौनोंआगुआपनोपियारो
पिउआपुहीमनाइकै ॥१०॥ अथभेदलछनं ॥ दोहा ॥
सुषहैकैसवसषिनिकोंआपुलेहुअपनाइ ॥ नवजु
छुदावैमानकुंवरनोंभेदवनाइ ॥११॥ श्रीराधाजूकोभे
[illegible]कवित्त ॥ केसवधाइषवासिनितोहिसषी
[illegible]कैसेसआवनिघाते ॥ मोहितोंमारइकिहेहौंवनेअ

ववांछिरईछिछितोकहिनातें । नेकहरहैंहरैंबोलिवला
इत्योंहेंउरयोंगडिजाइनजातें । माछनसोंमेरेमोहन
कोमननकाठसीतेरीकठेठीसबातें ॥ ११ ॥ श्रीकृष्ण
कोभेरउपाय ॥ काहूंकह्योहरिरूठिरहेतबतेंबहुउ
छिवितर्कैंबढावे । सोछिसबैअपनोसोरहोधनमा
नतहैसोरूपपाउनपावे । तहांवहरीतिइहांयहकेस
वज्योंडुडुओरजुरैक्योंजुरावे । पूछनिहोपियप्या
रीनिहारीसभानुकरैंकिमनावनआवै ॥ १२ ॥ अथ
प्रनतिलछन ॥ दोहा ॥ अतिहिततेंअतिकामतेंअ
तिअपराधतेंजानु । पाइपरैप्रीतमप्रियातासोंप्रन
तिबषानु ॥ १३ ॥ श्रीराधिकाकोप्रनतिहितेतें ॥
हिततेंचितयोज्युनस्येनेछुजउप्रेमकेकैपियपांउग
ह्योहो । मोहिविलोकिविलोकिअलीनिअलीकअ
लोकप्रवाहबह्योहो । पूछतिहोंसखिसीसहियेंति
तुओरसबैहियहेतरयोहो । कान्हहिंआपमनावनि
तोसोमैंमानुकिधोंअपमानुकह्योहो ॥ १४ ॥ श्रीरा
धिकाकोप्रनतिअतिकामपरषितें ॥ कवित्त ॥ न
वोलनिआपवोलायेहुवालकहालगीमोहिवकायेही
मारन । सोपस्योपांइसब्रुझिसषीसबदेतिहैज्योंजुवती
जिहिकारन । हठछाडिकौकंठउबाइलगाउकहाल
गिगेत्रिसूकासनिहारन । कौनभयोरिनैहुहैनपसबैता
तहिंलगाकछुनुलदुपारन ॥ १५ ॥ श्रीराधिकाकोअ
तिअपराधतें ॥ कवित्त ॥ केसवदाससउदामम
इंदरसाइइसाडुषयोसभस्योरी । रातिभयेअधराति
कह्नेलेविनेवडुवंधुवधूनिकस्योरी । धाइरहीसखुज्या
इकछुनसखीनिहुंकेसिषियेंतेंसस्योरी । काहेतेंमा
न्योनमानिनिमानुसुपाइनिजोलगिनाहुंयस्योरी
॥ १६ ॥ दोहा ॥ पियहिमनावैपाइपरिप्रियापरमहितमा
नि । नअपराधनकामतेंपरतनहींरसहानि ॥ १७ ॥ श्री
कृष्णकोप्रनति ॥ कवित्त ॥ नीरहितोविनुमीनमरै
परिमीनकोऔर । नीरहिकेजियजीहै । जोविनुओरस्व

हारनकेसवतांहिसुहारसतोसवकीजै॥ जौलगीमोप
गत्रामतिहैसलगीपगअंकलगाइनलीजै॥ होसि
षऊअपनेसपनेंहुतोआवतलछिकिवारनदीजै
॥१८॥ अथउपेक्षालछनं॥ दोहा॥ मानमुचावतेव
ततजिकहियेऔरइसंग छूटिजाइजिहिमानसो
कहतउपेछाअंग॥१९॥ श्रीराधाजूकीउपेक्षा॥
॥कवित्तु॥ चपलानचमकतिचमकहप्यारिनिनैं
कीवोलतनतमोरवंदीसपनसमाजके॥ जहांतहां
गाजतनवाजतरमामेंरीहरेतनदिषाईदिनमनिली
नेंलाजके॥ वलिवलिवंदमुखीसांवरेसषापैवोगिसो
कतजिकेसोहासअरिसुषसाजके॥ वढीचढीपवनुतरं
गनिगगनघनचाहतफिरतवंदजोधातमराजके॥२०॥
श्रीलालजूकीउपेक्षाकवित्त॥ केसोहासरिनरविके
तुकीकीभांवेभांतिजियमेंवसतिजातिनैननिमेंनलि
नी माधवीकोपाजैमधुसूदनतनअंधकहसेवतीसेपैनै
केहेसेइंगंधफलिनी॥ औरहैांकहतवातनकान्हकाहे
कौलजातहेसेतोषिस्यारसोजोहोरमनमलिनी॥दे
षोनहीवानपतिनिलजअलीकीगतिमालतीसौंमि
लोवाहेलियैंसाथअलिनी॥२१॥ अथप्रसंगविधूंसलदे
हा॥ उपजिपरैमधचित्तभ्रमलेष्मलिजाइजिहिमानु
सोप्रसंगविधूंसकविकेसवदासवषानु॥२२॥श्रीराधा
जूकोप्रसंगविधूंस॥ कवित्त॥ केकिनकेतवकाम
केकिंकावोलतउोलतरेतदोहाई॥ कामिनिसारहिका
मिनिकोऊरिसाइगीताकहहूहैरिसाई॥ गाजतनाहिन
मेघघतोंकेहूहैरिसांई दापहवाजततेंडीसषीसुष
दाई॥ मोहभयेफिरिकीवोअवोलोहावोलोंअवैवलिवो
लेकन्हाई॥२३॥ श्रीलालकोप्रसंगविधूंस॥ कोकीन
कीकारिकाकहतसकसारिकासोंहूरिहूरिहितवित
वौगुनोचढायोहै॥ हूविरहीसकुचनिवापुरीसुकीतो
कहिकाहूसोंसकैनरेहदुषनिउठायोहै॥ उविचलैन्याव
कीजेअवकेमनाइहीजेनीकेहीमेंकेसोदासकलदुवठायो

२६ है ॥ मानतनमनेपरउलटी मनोवे चहै सेसोईसयानुस्याम
सुकहिपठायोहै ॥ २४ ॥ दोहा ॥ रैसकालउषिवनितेक
लखनिकोमनगान ॥ सोभालभसोंगंधतेंसुषहीछूटत
मान ॥ २५ ॥ कवित्त ॥ घननिकीघोरसुनिमोरनिकोसो
सुति रसुनिसुनिकेसवनअलापआलीजनको ॥ दामिनीदम
केदेषिदीपकीदीपतिदेषिदेषिसुभसेजदेषिसदनसुव
नको ॥ कुंकुमकीबासघनसारकीसुवासभयोफूलन
कीवासमनफूलिकेमिलनको ॥ हसिहसिबोलेदोऊ
नहीमनायमानुछूटिगोएककहीबाररासिकारमनको ॥
२६ ॥ दोहा ॥ इहिविधिमानुछुडावही आवतमेंनरनारि
पलपलप्रीतिवठावहीकेसवदासविचारि ॥ २७ ॥ प्रीया
नप्रीतमसोंकोंरेअतिहठुकेसोदास ॥ वहरोहाघनआवई
जैहैजारउदास ॥ २८ ॥ बारहिबारनकीजईबारककीजैमा
नु ॥ कोहिकेसवज्योंआपुमेंसदावचेसनमानु ॥ २९ ॥ प्रीति
विनाभोहोइनहीमोविनुहोइनप्रीति ॥ प्रीतिरहैजहंमोरहै
वहैप्रीतकीरीति ॥ ३० ॥ गर्वविसनधनत्यागतेनिछुरवच
नप्रवास ॥ लालचविविधियकरनविद्यप्रियतेंहोइउदास ॥
३१ ॥ मानविरहवरनेविविधजहांविविधवविवास ॥ केस
वदासकहैककुकहियतविरहप्रवास ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमन
महाराजकुमारइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां
विप्रलंभशृंगारेमानमोचनोनामदसमःप्रभावः ॥ १० ॥
अथकरुनारसलछनं ॥ दोहा ॥ छूटिजातकेसवजहांसु
षकेसवेउपाइ ॥ करुनारसउपजततहां आपुनतेंअकुला
इ ॥ १ ॥ करुनाविरहा ॥ सुषमेंदुखवेंपाचरनिपेरवरननप्यो
हार ॥ तरविप्रसंगगहिपाइकछुवरनतमतिअनुसार ॥ २ ॥
श्रीराधाजूकोप्रछन्नकरुनारस ॥ मैपठईमतिलैनसषी
सरहीमिलिकोमिलिवेकहंआनै ॥ जाइमिलैदिनहीदिन
हूतिरयालसोंदेहदसानवषानै ॥ प्रेरतपैजकियेंतनुप्रा
ननिजोगकेऔरप्रयोगनिषानै ॥ लाजपैंबोलनपाऊंन
केसवसोसहिंकोउकहादुषजानै ॥ ३ ॥ श्रीराधाजूकोक राम
नाविरह ॥ कवित्त ॥ हरितहरितहारनहेरतहरतहीयेंहारहै २६

हरिनैनैनहरिनकहूंलेहो ॥ वनमालीव्रजपरवरसतवन
मालीवनमालीहूहरिदुषकेसवकैसेंसहौं ॥ हृदयकमल
नैनदेषिकैकमलनैनहौंउगीकमलनैनऔरकहूंहौं
कहाकहौं ॥ आपघनघनेस्यामघनहीसेहोतघनस्या
मनिकेघोसघनस्यामविनुक्योंरहौं ॥ ४ ॥ श्रीकृस्न
जीकोप्रछन्नकरुनारस ॥ जैसेंमिल्योप्रथमसुवन
मगजारमनुरवनभवनकीजेअलिकअलकमें ॥ म
नुमिल्योंमिलेनैनकेसोदासमविलासछविआसभ
लिरहेकपोलफलकमें ॥ वैनमिलेमिल्योज्ञानसकुल
सयानुमजितजिअमिमानुभूल्योतनकीफलकमें ॥ ते
सेंछलवलसाषिराषिकेमिलनकहुवाहतकियोपया
नप्रानऊपलकमें ॥ ५ ॥ श्रीकृस्नजूकोप्रकासकरुना
विरह ॥ हेतरुनाईतरंगनिपूरअपूरवपूरवरानंगप
प ॥ केसवदासजहांजुमनोरथसंभ्रमविभ्रमभूरिभरे
भय ॥ तर्कतरंगतरंगिनतंगतिमंगलसूलविसालनि
केचय ॥ कान्हकछूकरुनामयहेसषिनेहीकियेकरुना
वरुनालय ॥ ६ ॥ अथप्रवासलछनं ॥ दोहा ॥ केसव
कौंनहूंकाजतैंपिउपरदेसहिजाइ ॥ तासोंकहतप्रवा
ससवकहिकेसवसतुकाइ ॥ ७ ॥ कृस्नकोप्रवासविर
ह ॥ कवित्त ॥ जौनेकहामेरीहारघसांसलैनैननवारही
तोविथाहूं ॥ माधोनहूषिहैसूधैनिहारीयषारीरहीसुख
क्योंनअन्हाहूं ॥ ऐसेंहीकेसवक्योंरहैंप्रानसआपनी
पीरसुनावडुकाहू ॥ कैहूतीभोरीकैभोजनैछांडोपेपा
न्योनपीवैतैंपाननषाहूं ॥ ८ ॥ श्रीराधाजूकोप्रछन्नप्र
वासविरह ॥ कवित्त ॥ लेकरिहैकहिषौंकवगौनहिनं
दकुमारतौंगौनकियोई ॥ मोहिमहाडरतूंउरकोनरहैंल
टिलैजिनिकैषांलियोई ॥ ऐसीनकहूंकियेकेसवतोहिविवा
ल्योजुवीचविवाहवियोई ॥ तेरेहिजीपजियेजिनकोजिय
रेजियताविनुतूंवजियोई ॥ ९ ॥ श्रीराधाजूकोप्रकास
प्रवासविरह ॥ कवित्त ॥ कौनकेनप्रीतिकोनप्रीतमहि

हिषिछुरतिपाहीकोअ्रमाषोपतिवृजगाइयतुहै॥केसोहा
सयतनकौंहांभलैंऔवेहाथेऔरकेहापछिनकेपाछे
धाइयतुहै॥छठिदृलौजोनमानैकाहूकीवलाइजानैमा
नैसैजुपहिचानैताकैआइयतुहै॥याकैलोंहुंओजहीं।
मिलौकैमरिजाउकहिआगिलागैमेरीमाईसेतुपाइयतु
है॥१०॥श्रीराधाजूकोविरहभयश्रम॥कवित्त॥कोकि
लकेकिकूलाहलहूलिउठीउरमेंमतिकीगतिलूली
केसवसीतसुगंधसमीरगयोउडिधीरजुज्योंतनतूली
जामिनिजामिनिकेववीजोन्हकीजामिनियैंनअ्ज्यों
सुषिभूली॥क्योंजियोकैसीकरौविससीवहुत्यौंविसि
नीविसवासिनिफूली॥११॥श्रीकृस्नकोप्रकासप्रछन्न
विरह॥कवित्तु॥जिनिबोलेहुषोलअमोलसबैअंगके
लिकलोलनिमोललियो॥जिनकोचितलालवीलो
चनरूपअनूपपियूषसोपीयजियो॥जिनकेपपंरकैस
वपानिछियेसुषमानिसवेदुषदूरिकियो॥तिनको
संगछूटतहीकितरेफुटिकोटिकटूकभयोनहियो॥१२
श्रीकृस्नजूकोप्रकासप्रवासविरहकवित्तु॥केसव
कौंहूंचलौचलिकोरिसंदेसकहौपुनिपेंडकहूंपर
आगेधरैअ्पनोसोकैसाहसपीछेहींपेलिपरैपगभू
पर॥होतजहींतहींठाढेठगेसेचलौंनकहौंपरैकाहूहि
तूपर॥लोककीलाजफिरैनपरैसुमिलानकरैदस
कोसकेऊपर॥१३॥श्रीकृस्नकेविरहभयभ्रम॥कवि
त्त॥षानपांनपरिधानपुनिजानगांनद्युतिअंग॥सु
भसंजोगवियोगविनुसातेसुषतिअभंग॥पेतकीना
रिज्योंतारेअनेकचढाइवलीविनयैवहुंघातो॥कोदि
निसीकुकुदैकरकंजनिकेसवसेतुरवैतनुतातो॥भे
टतिहेवरहीअवहींतोवराइगईहासुषैसुषसातो॥कै
सीकरौंकहिकैसेंवचौंवहरौंनिसिआईकियेंसुदुरा
तो॥१४॥श्रीराधिकाजूकीनिद्रा॥कवित्त॥आएते
आवेगीअंषिनिआगेहीडोलतिहैमनोमोलतईहै

सोवैनसोवनदेतज्यौंतवसोवनमेंउनसाथरहैहै
मेरीयेभूलकहाकहौंकेसवसोतिकहूंतेंसहेलीम
हैहै॥सोयहीहितुहैसवकेपरदेसगएहरिनींदगई
है॥१५॥श्रीक्रस्नजीकीनिद्रा॥कवित्त॥केसवकैसेहूंको
रिउपाइनिद्राआनिसवतौउरलागतिहै॥चकवौधतिसी
चितवैचितमेंचितसोवतहूंमहिजागतिहै॥परदेसपि
यापलमोहिपत्यातिनयाकीकहौधौंकहागतिहै॥त
जिनैननिनींदनवोढचपलदृगआधिकरातितेंभागज
तिहै॥१६॥श्रीराधिकाकीसषीकापत्रीश्रीक्रस्नजीसौ
॥कवित्त॥केसवकुंअरिवृषभानकीकुंवरिवनदेवताज्यौं
वनउपवनविहरातिहै॥कमलाज्यौंथिरहूनरहतिकहूंएक
ठौरकमलानजाज्यौंकमलनितेंजरतिहै॥कालीज्यौंन
केतकीकेफूलनचैसीताज्यौंनिसिचरसुरवदेहूदेवही
डरतिहै॥वदनउघारतहीमदनसयोधनहिंरोहिणीज्यौंना
उवहतेरौररतिहै॥१७॥भौंरिनीज्यौंभवतिरहतिवनवा
थिकानिहंसिनीज्यौंमृदुलमृनालिकावहतिहै॥पिउ
पिउररतिरहतिचितचातकीज्यौंचंदुचितैचकईज्यौंचुप
ह्वैरहतिहै॥हरिनीज्यौंहेरतिनकेहूरीकेकाननहिंकेका
वानिव्यालीज्यौंविलानहीचहतिहै॥केसवकुंअरिका
न्हविरहतिहारेसेसोत्सरातिनराधिकाकीमूरतिडहति
है॥१८॥श्रीक्रस्नजीकीसषीकापत्रीश्रीराधिकाकौ॥ई
रघरीनिवसेकेसोराइकेसरिज्यौंकेसरिकौंदेषेंतनुक
रिज्यौंकंपतहै॥वासरकीसंपतिउलूकज्यौंनचितवतच
कवाज्यौंचंदचितैचौगुनौचपतहै॥केकासुनिव्यालज्यौं
विलातजातघनस्यामघननकीघोरवेजवासेज्यौंतपत
है॥भौंरज्यौंभवतवनजोगीज्यौंजगतरैनिसंकरज्यौंस्या
मनामतेरोइजपतहै॥१९॥दोहा॥केसवदासप्रवासको
कह्योयथामतिसाज॥राधाहरिवाधाहरनवरनौसषी
समाज॥२०॥इतिश्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजीतविरचि
तायांरसिकप्रियायांसंभोगश्रृंगारप्रवासविरहवर्ननंना

मा(प)का दशा प्रमाव॥ ॥ अथ सखी जनवर्ननं॥ दोहा
॥ धाइ जनी नाइनि नटी प्रगट परोसिनि नारि॥ मालि
निवरइनि शिल्पनी चुरहेरनी सुनारि॥ [illegible]सी
संन्यासिनी पटुपटवा की वाल॥ के सब नाइकनाइका
सखी करहिं सब काल॥ १॥ धाइ को वचनु श्री राधिका
सौं॥ मोहन सा पथ कहा निसि द्यौस रहै सतरंजहि को
मिस बैठी॥ केसब क्यों हूं सुनै महतारी तौ राषिहै रीघ
रही मह पैठी॥ हौं सिष ऊं सुष दै सिष तो हि तैं मोह वढा
इ कै डीठि ऐसी॥ कोन लड़े तो सरूपन को है तहीं क
छु जात अकास हि सैठी॥ ३॥ धाइ को वचन श्री कृस्न जी
री सौं॥ थोरी सी सुदेस वेस हीर घन यन को स गोरी जू सी गो
री भोरी भव जू की सासै सी॥ सोवे की सी ढारी श्रुति सुक
मसुढार कटि के सौ दास अंग अंगभाइ के उतारी सी॥ सो
ध की सी सोधी देह सुधा सौं सुधारी पाउं धारी देव लोक तें
कि सिंधु तें उधारी सी॥ आजु पासौं हसि षेलि को कि वा
लि लै दुलाल का ल्हि ऐसी बालि लाऊं काम की कुमा
री सी॥ ४॥ जनी को वचन श्री राधा जी सौं॥ सोभा को सघ
नु वनु मेरो घनस्याम नित नई नई रुचि तन हेरत हिराइ
ये॥ केसौदास सकल सुवास को निवास करि विविध
विलास हास रास विसराइये॥ सुष रसु केतकु मकरंद
रसमा ठौ है पिय षट्पद की पैली घाहैं जाकी निर्धराइये॥ चो
री चोर नैन निचरा सं सुषु को तजो लौ पिय मन माहं मन
मोहं मैं न्हैं मिलि न बराइये॥ ५॥ जनी को वचन श्री कृस्न सौं ५
॥ ऐसी वातैं एसी हौं धौं कैसें ही कही परति जाकी मति ग
ति लाज पार सौं लपेटी है॥ मेरे हू न आवे मेरी वार सनी वे
रे वै तौ जानति हौं धाइ ही के साथ लोहि लेटी है॥ ऐसी तो है
चेरिनि की चेरी वाकी केसौदास जैसी तु महा हाकरि यों ढ
परि भेंटी है॥ जानति हौं नं दजू के वेटा हौ जू जा मौ वो लि वे कु
लौ उत हि ट्रपभानजू की वेटी है॥ ६॥ नाइनि को वचन श्री
राधा जू सौं॥ अब ही तौं गए पुनि पौरि हू लौं न पै वोलन राम
जाहि रो पाछे हि लागे॥ करि हौ तब कै सी परा सजो दोर हि १८

ह्रै है कछु निसि दै सिके जागें ॥ जो न रह्यो परे के सब कै से
हूं है वन ही रहु सुख पास समागें ॥ देति हो जानक्यो राष
ति का है न आरसी जों करिअंषिन आगे ॥ ७ ॥ नाइ
निको वचन आक्रम सों ॥ वड़ी जिय लाज वड़ो उरु आली
वड़ी लटु रारजेंा वलै वितु लीनें ॥ वाड़ी वड़ी अंषि वड़ी छ
विसों वितवै वड़ी वेर वडो सुषदीनें ॥ वडे ही विचार वड़ी
न वि के सब क्यों हूं मिलो तौ मिलो हम हीनें ॥ वड़ी निहूं सों
तौ वडे दुष वोलै रतै वडे मान वडो मनु कीनें ॥ ८ ॥ नरीको
वचन आगमिका सों ॥ जो हों दिषावन तो हि गई री तौ तें
मेरी ये यो वगहाफिरमाई ॥ आजु कहा दिषसाधलगी
है दिषाऊं गी जाइ तौ वे रव न्हाई ॥ देषतें सोरी हू जातिम दय
न देषें जे रे सबहै अधिकाई ॥ गतिको वेगति धीसकी पुछ
हो तेरी ये वात निवाज हि आई ॥ ९ ॥ नरीको वचन आह्ल
सों ॥ जहीं जहीं दुरै नहीं जो न्हसें सी जगमगें कै से हूं जो
के सब दुराउ लिये रंग की ॥ पवन के पंच आलि आलिनी के
पीछे अली आलिनी ज्यों लागी फिरे जिन्है है साथ संग की
निपट आमिलव हत हैं मिलि वे की यक के से कै मिलाउं
गति मोपै न विहंग की ॥ रुकुतौ दुसह दुष देति दुती हती हू
जैं वी सवि से विस वास भई वाके अंग की ॥ १० ॥ पत्रो सिनि
को वचन पीरासिकासों ॥ पांइ परें पति का पर सों सल
गोरे ति तौ लन मे लिरती हो ॥ सो है कि ये मुहु सों हो किये
अवलोंत मैं पे गति से सा न छी हो ॥ के सब कैसें हूं देषन को
जिकैं भोर ही भोरी कै आनि रती हो ॥ पान षवावत हीं तिन्ह
सों तं न्हारा ति कहा सतराती हती हो ॥ ११ ॥ पत्रो सिनिको
वचन श्रीकृस्न सों ॥ हांसी मै वानक वासों कही हसि वे दु
कहो सहित के रिले ष्यो ॥ आंषी मिली न मिली सषीयो
मिलिवो इस के सब क्यों अवरेष्यो ॥ वियाइ मरौ चुप सा
धो कि वातक स्वातिस मैं ही अचे स विसे ष्यो ॥ आजु हि
के पौं वह आवति हीं जिहि आगि लगे हूं न अंग नु देष्यो
॥ १२ ॥ मालिनिको वचन आराधिकासों ॥ दुरि है सौंभ
ह न वसन दुतिजो वन की देह ही की ज्योति होति धोस

१९ ऐसी लगति है ॥ नाह को सब बास लागे है कै है कैसी के सब सुभा
वही को बास और भीर फारै याति है ॥ देषि तेरी मूरति को सु
रति बिसरति हैं ॥ लालन के दृग देषिवे कों ललचाति हैं
व लिहै क्यों चंद मुखी कुचनि के भार भये कचनि के भार तो
लचकि कटि जाति है ॥ १३ ॥ माननि को वचन श्री कृष्ण
सौं ॥ घेरी जननि मोहि घर जान दे दु घन स्याम घरी क मैं ला
गी उर देषिवी जैसें दामिनी ॥ हाइ कोउ ऐसी वे सी आवे इत
उतें है सब वह वृषभान जू की बेटी गजगामिनी ॥ आदित
को आपो अंत आउ वनि वल्लि जात आंषैं वनी हैं वेऊ वनी
२ आई उरु जामिनी ॥ काम के डर मैं तम कुंज गह्यो के सौ रा
र मोरन के भय मौंन गह्यो उन भामिनी ॥ १४ ॥ वरइनि कौ
वचन श्री राधिका सौं ॥ यथा कवित्त ॥ मैं तुम सौ मनु ह
दु तुल मृनालिका के सुतनु के से सरधुनि मन हिहरति
है हास्यौं के से बीज दंतन याते से अरुन ओठ के सौ रामरे
बिद्रम ओनर भरति है ॥ रावरी मेरी तेरी मोहि भावति भलाई
तातें कहति हों तो हि और रूष कति डरति है ॥ मोषन सी जी भ सु
मुष कें जसी कों वरो कहि काठ तैं कठेठी वातें कैसें निकसति
है ॥ १५ ॥ वरइनि कौ वचन श्री कृष्ण सौं ॥ नैननि न वावे
नैकु आनि हो अनीति कै रो जान तन न तमजे सें बुजजानिय
त है ॥ वेवल चारे व बिन चेट कचट कि ल्ला वे चोर के वितनि
अभिसार सो पियत है ॥ एक निके पेठ ओर उर सितरो जनि मे
उर मे तें कै सारा र कै मैं न जियत है ॥ ऐसी कहूं होति है ज्यु वा
लनि के चोरि [illegible] मन न मनमथ [illegible] ही के कहां घंचे विय हा
तें है ॥ १६ ॥ शिल्पनी को वचन श्री राधा जू सौं ॥ यथा क
॥ अब ही सपनि बालिरी चोलि लगी जक यौं रि डुलै उठि
जान न दीनैं ॥ मेरे हा जान भ [illegible] सै दीन्हु मही वस के सब
हे कहि विक दुकीनैं ॥ जो पै रतो दुख पावति कैं हो न तले फेद
ग मान मैं नौ जल हीनैं ॥ तो कत छौंडति रो छितसकुं हे
किन वि [illegible] हा थहि लीनैं ॥ १७ ॥ शिल्पनी कौ वचन
श्री कृष्ण सौं ॥ यथा क ॥ घोर सुरी जिम [illegible] रहे गहि वो
र कुठौर निजानि न जाहू ॥ लाजन आवति मारे सभा उ

नलागेअलोककेलाजनताहू ॥ कोरिविचारविचारदु
केसदरेषहवकि हितसवकाहू ॥ नेहहिकैफिरिलागदु
संगननेनानकोंसंगउरनिवाहू ॥ १८ ॥ दुरहेरीकोवचन
श्रीराधाजूसों ॥ यथा ॥ क ॥ मनमनमिलेकहामिलिहैमि
लेकोसुषमिलिहूधौंरेषदुवोलाइकाहूवालसों ॥ अलिप
रेमोहेनिहींवांधिहोकितेकदिनवांधोवलिजाउंरनमाली
वनमालसों ॥ तुहमारेमारेनमरतहिमकेसेदासरोंरेमा
रइधौंमेरकेहेकेहेकमलसनालसों ॥ नैननिहींविह
सिविहसिकौलोवोलिहोहोकवहूंतौवोलियेविहसिमु
षलालसों ॥ १९ ॥ दुरहेरनिकोवचनश्रीकृस्नजीसों ॥ क ॥
आपुनहेंजेदुषीदुषजाकेहोताहिकहाकवहूंदुषरीजे
जाविनुओरसहाइनकेसवताहिसहाइसतोसवकी
जै ॥ भागवडेजुरचीतुमसोंवहतोंविचारकहोकहाली
जै ॥ जोरिसजाइतौजोमनावनतातेहेदुषुसेराइनपी
जै ॥ २० ॥ सुनारिकोवचनश्रीराधाजूसों ॥ क ॥ लोलअमो
लकराछकलोलअलोकतसोपरचौवालिकफेरे ॥ पा
निपसोंअतिपैनरसालविसालदरेनैमनभावनमेरे ॥ के
सवकेनेंचोगुनेंचोषेचितेकैभासहरिन्याइहिचेरे ॥ सो
वसकोचनश्रीरतिरोचनधीरजमोचनलोचनतेरे ॥ २१
सुनारिकोवचनश्रीकृस्नजीसों ॥ हासीमेंहसतैंहरिहारे
कैंकुकविमनहारिकैंहसतिहेरिहियेअनुरागीहै ॥ प्रेम
कीपहेलीगूढजानतिजनाचतिहिआजुअधरातकलो
मेरेसंगजागीहै ॥ अवलौज्योंधरीधीरतैसेदिनद्वैकओ
रधारेगिरिधरतुमतेंकोनवडभागीहै ॥ भावतीतिहा
रोवहकाल्हिहीतेंकेसेगाइकामकीकथानिकछूका
नदैनलागीहै ॥ २२ ॥ रामजनीकोवचनश्रीराधाजूसों
॥ क ॥ कोमलअचलवेतोअमलसनीछनचलमलि
ननलिननवनीलकेसेपातहै ॥ सूषेसाधुसदवेतोकु
टिलकरमसदाकेसवपरमवोरमरमकिरतहै ॥ पाइहि
एकरितवपाइहैनकेसेंहूंलषोरोअठिलातिवेतोअ
तिअठिलातहै ॥ वरजतिवपोनतंहेकवकाकहतिमे

२ रेमोहनकेमनमेरेनैनछूछेजारा है॥ २२॥ रामजनाकेव
चनश्रीकृस्नजीसों॥ कौंनहूंनोषकेहाभयोकेसवका
मिनाकोटिकसोंहिनुठाईं॥ एकसाधसषेसषकोविरु
राधेकोआधोकलोवनडोवे॥ कोंषरिमीतनवासुकेरैस
षजोरभषाघनसारकेसाटैं॥ लीलचहाथरहेहजनथैपे
यासतुमानलनवोसकोचाहे॥ २३॥ संन्यासिनिकोवच
नश्रीराधिकासों॥ क॥ नछूटिहेछुडाएजवकरिहोधोंं
केसीनवकेसोहासखनयासेप्यासेभूषभागिहे॥ षवु
भूलिजाइगोजुउठुगोनविनवेतिकछुनसहाइगोरीरेते
सहसगुनीउपतिपरेगीउरसेसीसकआगिहे॥ सेंउसोंसं
डाहिजनिअंचलतउठानओलिओडतिहोकाहूकीनडी
ठिउडिलागिहे॥ २४॥ संन्यासिनिकोवचनश्रीकृस्नसों
॥ कवित्त॥ सीतलनहीतलतिहारेंनवसतिवहहुमन
ता नजानिनिलछोंकोउरतापगेहु॥ आपनेंजोहीरासोप
रराहाथहजनाथरैकैतोंअकाथसाथमेनसोमनुले
हु॥ सतेपरकेसोगइतम्हेनषवाहिवाहिवेहेजकलागीभा
गीभूषसषभूल्योदेहु॥ माडोंमुकुछाडोछिनछलनिछ
वीलेलालसेसीतोगवारिनसोंनमहीनिवाहिोनेहु॥ २५॥
पटइनिकोवचनश्रीराधाजूसों॥ कवित्त॥ याहीकोंमेरी
गुमाइनिमेपहिलेंमिलईवतियाकछूसिछेलो॥ वानमि
लेंआषियोमिलईसषियानिकोंआषिनिपारिकैलो॥
आंषिमिलेंमुहूसोंमिलिहेमनुलेहुमिलेवगेहंहमगेतो
मिलेमनुमाइकहाकरिहोंमुहहीकेंमिलेंतोकियोमनुमे
लो॥ २६॥ गेहकेनेहकेरेहकेरेषाकेभूषनकीजिनभूषभ
गाई॥ मोहिहसीदुषहोउरईतिनहूंसोंजनावतिहोंचतुरा
ई॥ केसवरारवडाईईतोकहाभयेउजानेतमाउनजा
ई॥ सोंनेंसिंगारहूंसोंधोवनाइनयानिरकीपितराईषि
जाई॥ २७॥ पटइनकोवचनश्रीकृस्नसों॥ वामृगनेनी
ज्योंओरनिहूंनुलगावनहोमुषऐसेनहूजे॥ सोनोंर
सीसनयीतरिहोरतोकेसवकेसेंहूहाथनछूजे॥ आ राम
पुगिरायनुजोंमिषवैननंकाकुनकोकिसजैपाकलकू

जै॥ सं२रस्यां सुविरामु करौ कछु आमकी साधन आ
मली हूजै॥ २८॥ वयन अयन लघ मयन करक है सषि
निके मर्म॥ केसवक है कछु कुअव तिन के कौ विदक
है॥ २९॥ इति श्रीमन्महाराजकुमार श्री इंद्रजीत विर
चितायां रसिकप्रियायां सषीजनवर्ननं नाम त्रयोदशः
प्रभावः॥ १३॥ सिक्षा विनय मनाइ॥ वौ मिलवौ मिल
वे कराहि सिंगार कुकिअन रहिजराहनौ यह तिन कौ व्या
हार॥ ३०॥ श्रीराधिकाजूकी सिक्षा॥ ना हुलगे मुह सौं ति
रहै रिन नाही लगै दुष देइ रहै गौ॥ नांही अवै सषु है तिहि
के सब ना हु सरास सुदे तर है गौ॥ सौं नाही तैं नाही री ना
ही भला ई भली सबु नाह हीं तै पैं कहै गौ॥ नाह सौं नेहु
निबाहिव ला इस्यौं नां ही सौं नेहु कहानि वहै गौ॥ ३१॥
श्रीकृष्ण कौ सिषा॥ कुंकुम उवटि कुमकुमा कें न्हवा
इ जल सौ धौ सिर लाइ यहि लास कहा रस मैं चंद्र सुव
दार फूले फूलय हि रा इ भलि वेही काज आजि माजि
कौं नौ है प्रकास मैं॥ केसव क रूर पूरिका है कौं षवा
वौ पान जौ पैम नमगवहै ऐसे ही विलास मैं॥ तौं बा
हा न मना वौ हरि हा हा करि पाइ परि सब इ छबा सब
सेजा के सुषवास मैं॥ ३२॥ श्रीराधिकाजूकौ विनय
॥ ऐसेही कैसे तुम ह्वै रहि हौ सषि हौं सहि हौं सतराह
ट सौं लौ॥ कैसे सरि है मिलि वे विनु तौ हितचें मिलि
सो मिलि है रिनजौं लौ॥ केसव कोरि करै उपचार मिले
कौं कहा मिलि है सषु तौ लौ॥ देषि धौ अंगनि आरसी
लै मिलि है पिव सौं मन ही मन कौ लौ॥ ३३॥ श्रीकृष्ण
जीकौ विनय॥ रूप कै सेफ तनैन दास्यौ सेरसन ग्रेन
ला तु सेअ घर हा लस धा मौं सुधा स्यौ है॥ वैनौ पिकदें
नौ त्रिवेनी सी वनाई वीर वारी कुवा ह सौ करि हा कौ क
रिहा स्यौ है॥ कौनै कुच अमलक लपत न केसे फल
केसौ रासजा नैं विधि सुगष विवास्यो है॥ देषौ न सुप
लसषि मेरी कैतरी न सबु सौ नौ सौ सवारि मानौ मैन

सो सवार्यो है ॥ २४ ॥ मुग्धाकौ मनाइबौ ॥ नौ ही सिषाव
ति नाहीं भली सषि जाव कै कौ तिनकौ मुह डाठो ॥ भू
हनिकौ भुलवौ अमनावनि तैं न निकै मन सो हितु वा
ढो ॥ राजु कैसे यह आजु सखरी है कै सव विलैयो आ मैं ही
बाढो ॥ काल्हि तें काली कै देने दई हसि पाइ पैरनि परी
मुह कौ ढो ॥ २५ ॥ श्रीराधाजू कौ मनाइबौ ॥ रीझि रिझा
इ रोष निकाषि रही मुषरे षि हिसाइषै सभा हीं ॥ बोल
न आए ज्यों बोली भईच्छ वके सव सेती हमैं न सुहाहीं ॥ मे
वहु तें वहराइ हैं तो सौ री न्हे वहरावति मो हि हियाहीं ॥ ए
पा ही सवौ नसहाय वलि हैं हरि सौ हसिहौं करि मोहि सौ न
ही ॥ २६ ॥ श्रीकृष्णजू कौ मनाइबौ ॥ भूषन देहु मनाइकै
कै सव फूलव नाइ वनाइ कै वागे ॥ भागु वढाइ सहाग व
ढाइ कै रागु वढाइ हियै अनुरागे ॥ पाइ निलागत सौं धौ चढा
इ तपान षवावत हीं निसि जागे ॥ कान्ह चलौ उठिवे ठेक
हा मनु मूसि पराये वरू सन लागे ॥ २७ ॥ श्रीराधाजू कौ
मिलिबौ ॥ दुलि भरे वि निहू कौ सतै हरि कौ मन हाथ लि नि
ही हरि लीनौ ॥ हार हु जे हिय तें कव हू अव ज्यौ गुरकौ हि
यौ मैं चुपु कीनौ ॥ ले तलियौ तन मान हु काहू सौं मानि
हू वारि न दुपु न दीनौ ॥ भाग न आवै मौरी जैसे भट्ट आपनौ म
नु ज्यौ वह जाइ न रीनौ ॥ २८ ॥ मध्या कौ मिलिबौ ॥ आजु
हि वारी की रातिजु कीजै सषि आजु के चौसलें हि है सभागी
वात सुनीज न नी पै जहीं तवहीं मति मान कानी रहैं ज
गी ॥ अंग लिंगारि निहारि निसा तन ने वि कै विहार निसौ
अनुराग ॥ राप रैदे विनिजा इनु वाम मिलि के सवरा इसौ ष
लन लागी ॥ २९ ॥ पुनः कवितु ॥ जौ हौं गनौ अैगुन नि
तौ न्है गनै गुनगन जौ हौं गनौ गुन तो न्है अैगुन के गन
मैं ॥ कैसौ दास सेहै सी नि छपाव नि छल निमैं जैसे छवि
छू टि छू टि छू टाछे पे धन मैं ॥ भारी है निहारि निसि भ
मयावनी मैं सौ कौ वसे घर जाकौ पी उव सै वन मैं ॥ वे वेत
उठौ वेउ विवले तें मनु लिरहे सो इप्यारी कयौ न कहै जौ है तैं रे

मनमें ॥ ४० ॥ श्रीकृस्नकौमिलिवौ ॥ सिषेहारी सषीउरवा
इहारी कारविनीरां मिनीदिषाइहारीदिसञ्चधानकी
मोरिमोरिहारयो मोरतिनुकिनुकिहारीहारीनकजोरनि
निचिखिमगतिवातकी ॥ दईनिरदईदईवाहिकहाऐसीम
निजारतिजुरेंनिरिन दाहुऐसेगातकी ॥ केसेंहूंनमानें
हैंमनाइहारीकेमोराईबोलिहारीकोकिलाबुलाबुला
इहारीवातकी ॥ ४१ ॥ राधिकाकासिंगार ॥ हीनेमेंपार
निकाइमहावरुन्ग्रांजीमेंअंजनअंषिमहाई ॥ भूषनभू
षिनकीनेमेंकेसबमालमनोहरमेंपहिराई ॥ दर्पनलै
अवरीपतिहैषिसषीसवअंगसिंगारसिधाई ॥ वेकवि
लोकनिअंकलेपानषवावेकोकांन्हकुमारकिनांई ॥ ४२
॥ श्रीकृस्नजूकोसिंगारकवित्तु ॥ पागवनीअनहवौगो
वन्योवदुवाषदुकाकारिराकरिनीको ॥ सोधोवन्योश्री
तिचारुचठावनहारवन्योउरभावतजीको ॥ वीराखर्यो
मुषषातमनोहरमोहिसिंगारलगेसवफीको ॥ भाल
भलीविषिजोलोगुपालकीजोउहिवालवनाइनदीको
॥ ४३ ॥ नृस्नुकोगुकिवो ॥ कुंजनहेइहगांचमटूमुहकांन्ह
कोनावजुलीजनजैहै ॥ जागेतुमारीहेकौंनेहीकोंक
रीथोरहेंछैलछबीलीजोतैहै ॥ बातनसेंम्हारिकहैहोसवनिहे
कोकुआगिलाौवैकोउतरकैहै ॥ कान्हहुंहीमारीनैवा
रीहैवावरीलतउनसौंकेसेंगारिहिहैहै ॥ ४४ ॥ श्रीराधिका
कोगुकिवो ॥ फिरिफिरिफेरिफेरिफेरोमेंहरीकोमनुमन
फेरेंफेरीफुनिभागकीभलीघरी ॥ पलपलपाइनुपरति
हुतीजिनिकेसवपारपायपीउतेरेपांइपाकेपांइहोंपरी ॥ व
डेनिकोवेरिनिकीवडाथेवडाईमेरीकेमोराइकोसोमैतू
याहीकोवडीकरी ॥ मैंतौजामेमनायसतेंमेरेगुनमानिहे
रीमेंस्ताहीकोमनाईजुतेमोहूकोंमनीधरी ॥ ४५ ॥ केस
वराइबुलावनहैचितचाउसलोचनिवेनुकरोज्ज ॥ कान्हि
कलेवरसकुविसोपरवासविसेंवनननेनररोज्ज ॥ आगिल
गेतेरीकान्हिकेसीसपरोंपरजारवजागिपरोज्ज ॥ आञ्जु

मिलौनमिलौव्रजराजरुजेहिनाहिंनैनांकेंहैराजुकरै
जू ॥ ४६ ॥ कृस्नकोउकिवो ॥ तासोंवसाइकहाकहिके
सवकामललातनतेंदुरई ॥ विधिकीलिपिलोपिनजा
ऱ्यमोतिकलैमनिसासमुजंगरई ॥ अपनोमुहदेषहुआ
रसीलैपुनिवातकहौपरिमानलई ॥ वृषभांनसुतापर
औरसुहागिलवातजहांलगुजीभगई ॥ ४७ ॥ श्रीराधाजू
कोंउराहनो ॥ केसौदासकौंनवडीरूपकूलजानिपेअ
नोषोपकनेरेहींअनषउरवोलिये ॥ आपनेसमानका
हूमानतसैंनमानेतूंगुमानकैविमानवैठीव्योमव्योम
डोलिये ॥ सेंदुसोंअंडाइअतिअवलुउडाइअैसीछो
डीअैंडवैंडीचितवनितिरमोलिये ॥ दीनोमनहाथजिहि
हीतसोहरिषकैताहरिसोंहरिनैनेनीहेरेहूंतौवोलिये
॥ ४८ ॥ श्रीकृस्नकोउराहनो ॥ सोंहनिकेसोचनसके
वकाहूवावकीकेपोंछैंप्यारोपीकपोवलोचनकिना
रेकी ॥ माषनकीचोरीकीहैथोरीथोरीमोहूंसषिजान
तिवैहैकिसोरीजोरीहैजुवारेकी ॥ मेरीयेकुमतिऔर
कहाकहौंकेसौराइलागतिहैलालललाजूइहापांउंपा
रेकी ॥ एनीहैंपुठाईवहअवहींसवाईवहछारउतौछु
टीनाहींपाइनिकेपारेकी ॥ ४९ ॥ आंधीसीधाईहैरीरि
वारीसीहासिनिकेदुषरहेरहीहै ॥ तापकेतलनमोरिनि
मालिनिनाइनिनाहकेनेहनहीहै ॥ तेरीसौंतेरीसौंमेरे
सषीसुनितेरीअकेलीकीआसरहीहै ॥ कान्हमिलाइ
केमोहिनपाइहैआपनेजीकीमेंतोसोंकहीहै ॥ ५० ॥ दो
हा ॥ इहिविधिस्यामसिंगाररसवहुविधिवरनेंहुलोइ ॥
चारिवरनवहुआश्रमहिकहतसुनतसुषहोइ ॥ ५१ ॥ अ
वेहास्यलछिनकहौंकहेयथामतिसाज ॥ मनसावाचा
कर्मनावरनतहेकविराज ॥ ५२ ॥ इतिश्रीमन्महाराज
कुमारइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायांस्यावर्न
ननामत्रयोदशःप्रभावः समाप्तोयंसिंगाररस ॥ ७ ॥
अथहास्यलछनं ॥ दोहा ॥ नयनवयनकछुकरतजवम

नकोमोदउदोत ॥ कहरविन्नपहिचानिकैनहीहास्यरसै
होत ॥ १ ॥ अथहास्यभेद ॥ दोहा ॥ मंदहासकलहास
पुनिकहिकेसवअतिहास ॥ कोविदकविवरनतहैंसवै
अरुचौथोपरिहास ॥ २ ॥ अथमंदहासलछनं ॥ विक
सहिनयनकपोलकछुदसननसवननकेवास ॥ मंदहा
सतासोंकछुहतकोविदकेसवदास ॥ ३ ॥ वरननतवा
देयंघतिहिकहेनकेसवदास ॥ औरोरसयोंजानिपों
सवप्रछन्नप्रकास ॥ ४ ॥ श्रीराधाजूकोमंदहास ॥ वै
ठतिहैतिनमैंहहठिकैजिनिकीतमसोंमतिप्रेमपगी
है ॥ जानतिहौनललाजदमैतीकीहूतकथारसरंगरंगी
है ॥ सजैगीसाथसवेसुषकीवडेभागकीकेसवजोति
जगीहै ॥ मेदकीवातसुनेतेंकछुवहमासकतेमुसि
कानलगीहै ॥ ५ ॥ पुनः ॥ जानेकोपानषवावनवेपांहू
गईलगिगिअगुरिकोटनवीनेतैंचितयोनवहीतिहि
भांतिजुलालकेलोचनलीलिसेलीनें ॥ वातकहीहं
सयेहसिकेसुनिमेंसमुझीवेमहारसभीनें ॥ जानतिहौ
पियकेजियकेअभिलाषसवेयपिपूरनकीनें ॥ ६ ॥ श्री
कृस्नजीकोमंदहास ॥ दसननवसनमहिदरसेदसनउ
निवरसिमदनसरकरतिअचेतहै ॥ झाईंझलकतिलो
ललोचनकपोलनिमेंमोललेतमनक्रमवचनसमेत
है ॥ मोहैकेहैंरतीभावकाहूभेरीभांवतीकेभावतछवी
लेलालमौनकोंनहेतहै ॥ केसवप्रकासहासहंसि
कहालेहुगेजूऐसीहीहंसनितौहियानिहरेलेवहै
॥ ७ ॥ अथकलहासलछनं ॥ जहांस्रवनिपंकलधुनि
कछुकोमलविमलविलास ॥ केसवतनमनमोहिये
वरनेहुंकेविकलहास ॥ ८ ॥ श्रीराधिकाकोकलहा
स ॥ कवि ॥ काछेंसितासितकाछनीकेसवपातरस
ज्यौंपुतरीनिविचारी ॥ कोटिकरछिनवेगतिभेदनवा
वतनाइकुनेटुनिन्यारी ॥ वाजतहैमृदुहासमृदंगसु
दीपतिदीपनिकोउजियारी ॥ देषतिहौहरिदेषितुम्हैंय

३३ हहात ज्यों आंखिनि हीमें अखोरो ॥९॥ पुनः ॥ प्रेम घने रस
बैन सनै नग तिनै न निकी सरसै निमई है ॥ बालबहि
मद्रीपनि रेह त्रिविक्रम की गति ली लिलई है ॥ मोहै चतु
र सखीनि दुराइ इतै मुसक्याइ उतै चितई है ॥ केसव पाई
है आजु भलै चित चोरि लै काल्हि ज्यों बालि गई है ॥ १० ॥
श्रीकृष्णको कलहास ॥ आजु कछू हरि तो सों सखी वा दूती
वा रलै बातें कही रस भीनी ॥ मेलि गरें पटुका पुनि केल
वहा रहि हियें मन तूहा रसी कीनी ॥ मोहि अचंभो महा सु
हहा कहिं बांह कहा बहु बार निली नी नैन लिरहा थरयो ठनके
उनि गांठि कहा हसि अंचल दीनी ॥ ११ ॥ अथ अतिहा
स लक्षनं ॥ दोहा ॥ जहां हसै निरसंक है प्रगटै सुषमुष
बास ॥ आधे आधे बरन पर उपजि परै अतिहास ॥ १२ ॥
श्रीराधाजूको अतिहास ॥ कः ॥ तै सीये जूं जगत जो
ति सी सती न फूलनि की झलकनि तिलक तरुनि तै
रे भाल को ॥ तैसीये रसन दुति रमकनि केसो दास तैसो
ई लसत लालु कंठ कंठमाल को ॥ तैसि चिमक कपोलवि
थुकक पोलनि की झलकत तैसोन कमोती चंचल बाल नै
को ॥ हरैं हरें हसिनै कच नूरच पलमैं नीचितु चक चौंधें मेरे
मदन गोपाल को ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णको अतिहास कवित्त
॥ गिरि गिरि उठि उठि रीझि रीझि लागे कंठ बीच बीच न्या
रे होत छबि न्यारी न्यारी रीसौं ॥ आपुस मैं अकुलाइ आधे अ
धे अषरनि आछी आछी बातें कहै आछी एक प्यारी सौं
सुनत सहाइ सब सुषमु परै न अब केसोराइ कासौं दुरि
रेषैं हैं दुस्यारी सौं ॥ तरनि तनूजा तीर तरवर तर ठाठे ता
री दै दै हसत कुंवर कान्ह प्यारी सौं ॥ १४ ॥ अथ परिहास ल
छनं ॥ दोहा ॥ जहं परिजन सब हसि उठैं बेतजि दंपति की
कांनि ॥ केसव कौंन हूं तु धि बलसो परिहास बषांनि
॥ १५ ॥ कवित्त ॥ आई है एक महावन तें त्रिय गावर
मानै गिराय गुवारी ॥ सुंदर ताज तु काम की कामिनि राम
बोलि कही हव भान दुलारी ॥ गोपी के लाइ गुपाल हिवे अ ३३

कुलाट मिलीत तिसा दर भारी ॥ के सव भेंटन हीं भरि
अंक हूं सास वकी करे गोप कुमारी ॥ २६ ॥ अथ करुना
रस लछनं ॥ दोहा ॥ प्रिय के विप्रिय करन तें आनै ना करु
रस होत ॥ २७ ॥ श्री राधा जू को करुना रस ॥ कवि ॥
तेज स्तार से अपार चंद्रमा से सकुमार शंभु से उदार उ
र उर धरियत है ॥ इंद्र जू से प्रभु प्रेम राम जू से रन स्लेरे का
म जू से रूप रूरे हिये हरियत है ॥ सागर से धीर गन पति
से वतर अतिरे से अविवेक के से दिन भरियत है ॥ नं
दु मति मंद महा जू सो सरसों कहौं कहा से सापात पार
पसुपाल करियत है ॥ २८ ॥ श्री कृष्ण को करुना रस क
वित्तु ॥ चंपे की सी कली मली के सव सुभरी रूप की सी बास
मंजरी मधुप मन भाई ये ॥ देव की सी बानी अतिवानी
तै सयानी देव राजा की सी रानी जानी जग सुष दाई ये
काम की कला सी चपला सी काम अवला सी कम
ला सी देह धरें प्रेम पुन्य पाई ये ॥ कौन नें कीनी निपर कुजा
ति जाति ग्वालि रे सी राधिका कुंवरि पाई गोरस विचा
ई ये ॥ २९ ॥ अथ रौद्र रस लछनं ॥ दोहा ॥ होतु रौद्र रस क्रो
ध मय विग्रह उग्र सरीर ॥ अरुन वरन वरनत सवे क
हि के सव मतिधीर ॥ ३० ॥ राधिका को रौद्र रस कवित्त
॥ के हरी की हरी कटि केकी मृग मीन कल निसक पि
क कंज षंजरीट तुली नो है ॥ मृदुल मृनाल विंब चं
पक मराल वेल कुंकुम दाडिम कहूं हूं नो दुष दीनो है
जोरत कनक तनु तन कत नकस सिव ठत घर ते व
धु जीव गंध हीनो है ॥ के सौ रास रास भल को विरकुंव
र कान्ह राधिका कुंवरि कोप कौन परकीन्हो है ॥ ३१ ॥
श्री कृष्ण को रौद्र रस ॥ मीडि मारयो कलह वियोग मारयो
वीरि के मरोरि मारयो अभिमान भारी भय भान्यो है
सव को सुहागु अनुराग लुटि लीनो दीनो राधिका कुं
वरि कहूं सव सुष सान्यो है ॥ कपट कै पेटि डारयो निप
ट के कै और निसी मेरीय हि वानि नव्है मैं हूं यहि चान्यो है

२४ जीत्योरतिरनुमथ्योमानमथहूकोमृनुकेसोराईको
नकहिरोसतरग्यान्योहै ॥ २२ ॥ अथवीररसलछनं ॥
दोहा ॥ होइवीरउत्साहमैंगोरवरनदुतिअंग ॥ अ
तिउदारगंभीरकहिकेसवपाइप्रसंग ॥ २३ ॥ श्रीरा
धिकाकोवीररसकोविनु ॥ गनिगनराजसाजिरेह
कीदीपनिसाजिहावरषभावपन्निराजेवलचावलसों ॥
केसोदासमंदहासश्रसिकुचभरभिरेभेरभेप्रतिभट
भानेनाषजालसों ॥ लाजसाजकुलकानिसोचपोव
भयभानिभोहैधनुवानुतानिलोचनविसालसों
प्रेमकोकवचुकसिसाहसुसहाइकुलेजीतिरतिर
नुश्राजुमररमेनगुपालसों ॥ २४ ॥ श्रीकृस्नकोवीरर
सकविनु ॥ अयुजैंउद्दारिहोकिवकज्यौंविदारिहै
श्रृंकेसकेसीकेसोराइकेसीज्यौंपछारिहौ ॥ हारिहौ
किपाननाश्छपूतनाकेपाननिज्यौंवननैंकिवनमा
लीकालीज्यौंनिकारिहौ ॥ कौरहोविमदुघनवाहन
ज्यौंघनस्यामकाहूसौंनहारेहरियाहीसौंक्योंहारिहै
वेहीकाघकामवरव्रजकीकुमारिकानिमारतेहैंने
रकेकुमारकवमारिहौ ॥ २५ ॥ अथभयानकरसल
छना ॥ दोहा ॥ होइभयानकरससदाकेसवस्यामस
रीर ॥ जाकोदेषतसुनतहीउपजिपरैभयभीर ॥ २६
श्रीराधाजूकोभयानकरसकविनु ॥ भुवमंडलमं
डितकैघनघोरिउठेदिविमंडलमंडिगरी ॥ घहरा
निघटाघटकानतकेसंघरघोषघटेनघरीहूंघरी ॥ द
सहूंदिसिकेसवदामिनिदेषिलगीपियकामिनिकं
ठतरी ॥ जनुपंथहिपाइपुरंदरकेवनपावककीलप
टैझपटी ॥ २७ ॥ श्रीकृस्नकोभयानकरसकविनु ॥
दोसमेरसकेबोलविसतेंसरसहोतजानैसोप्रवा
वलहपत्रिदोषैजिनिचाषीहै ॥ केसोराइदुंदुदीवेलाइ
कभयवनमश्राञुलडुजीसेंजाकीश्राषश्रमिलाषी राम
है ॥ सघेदेकूलधारिवे[illegible]श्रापसिबवनमोहिसूघेहूमे २४

सुभाव वा तैं मोसौं उनि भाषी है ।। ऐसे मैं हूं कैसें जाउं दुरि
दूधौं रे षै जाइ काम की कमान सी चढाइ भौंहें राषी है
।। २८ ।। अथ बीभत्सरस लछनं ।। दोहा ।। निंदा में बीभ
त्सरस नीलबरन वपु तास ।। केसव देषत सुनत ही तन
मन होत उदास ।। २९ ।। श्री राधिका कौ बीभत्सरस ।। क
वित्त ।। मातु ही कौ मासु तो हि लागत है मीठो मुष पिय
त पिता कौ लोहू नेकु न अघाति है ।। मैया निके कंठनि
कौ काटति न कसकति तेरो हियौ कैसो है जु कहत न सि
हाति है ।। जब जब होति भेंट तब तब मेरी भटू ऐसी सौं है
दिन उठि षाति न अघाति है ।। येतिनी पिसाचिनी निसा
चरी की जाइ है तुं केसोदास को सों कहि तेरी कौन जाति
है ।। ३० ।। श्री कृस्न कौ बीभत्सरस कवित्त ।। टूटे टाट घुन
षाने धूम धूसरी सौं न मनें कांगुर रंगोडी सांप बीछीन नि
घात जू ।। कंटक कलित तृन वलित विगंध जल तिन
की न लपता कौं अति ललचात जू ।। कुलटा कुचील गा
त अंधुत मअधात न कहि न सकत बात अति अकुला
त जू ।। छेंडी में घुसे कि घर ईंधन के घन स्याम पर घर जी
नि पह जात न लज्जात जू ।। ३१ ।। अथ अद्भुतरस लछनं
।। दोहा ।। होइ अचंभौ देषि सुनि सो अद्भुत रस जानि ।। के
सवदास विलास निधि पीत वरन वपु वानि ।। ३२ ।। श्री राध
जू कौ अद्भुतरस कवित्त ।। केसौदास वालवैस दीपति तन
हुलिति री वानी लघु वरननि तु षिय रमानकी ।। कौमल
अमल उर उरज कठोर जाति अवलोपें वलवीर वंधन वि
धानकी ।। वंचलचित नौ निचित अवलंब भाव साधु सक
ल असाध भाव काम की कथानकी ।। वेचत फिरति दषि
ले तन नि तैहैं हिले मोल तनी अद्भुत रसभरी वेटी ह्रषभान
की ।। ३३ ।। पुनः कवित्त ।। हजें की कुमारिका वेली नें स
क सारिकः पठौवें कोक कारिका निके सब सवौं निवा
हि ।। गोरी गोरी भोरी भोरी थोरी थोरी वैस फिरैं देवता सी हो
री हौरी आई चोरी चोरी चाहि चाहि ।। वितु गुन तेरी ग्यान भृकुटी क

नतानि कुटिल कटाछ बान यह आविर जु आहि ॥ सलका
न ईठ ठाठ तेरे अडीठि मतु पीठि देरे मारतीप चूकु तीन के
उताहि ॥ ३४ ॥ श्रीकृस्नको अद्भुतरस ॥ कवित्त ॥ बनमें
हि मिले हुते के सब हाइ कहा वरनौ गुन गूढ उधारो ॥ जो सु
दो पैं गई तौ वे वैं हि निपे वुरिपाहि गुहा वन जाइ निहारे
घर जाउ तौ सोवत है फेरि जाउ तौ नंद पै पावत वाग ह षिधा
रे ॥ सपनौ यह सत्य किधों सजनी हरि वा हिर होत वडे घर
वारे ॥ ३५ ॥ पुनः ॥ माषन के चोर मधु चोर दधि दूध चोर है
चो नही देषत ही चित्त चोरे लेत है ॥ पुरुष पुरान अपुरान
पुरान इन्है पुरुष पुरातन कहत कि है लेत है ॥ केसोदास
देषि देषि सुरन की सुंदरी वे करति विचार सव समति स
में तहै देषें गति गोपिका की भूलि जाति निज गति आ
तिनि कै सैंधो परमगति देत है ॥ ३६ ॥ अथ समरस वर्न
न ॥ दोहा ॥ सव तें होइ उदास मन वसै एक ही ठौर ॥ ताहि
सौं समरस कहै केसव कवि सिरमोर ॥ ३७ ॥ श्रीराधाजू
को समरस कवित्त ॥ देषै न ही आरविंद नि त्यों चितन चंद
की आनन ईकै दरनि काई ॥ कानन नि काम कथा करै कामि
नि ताके त्रिधाम की सुंदरताई ॥ देषि गई जब तें तुमकों
तब तें कछु वाहि न देष्यो सुहाई ॥ छाडेंगी देह जु देषि
ना आहेहो देहु न कान्ह कहूं है दिषाई ॥ ३८ ॥ श्रीकृस्नको
समरस कवित्त ॥ षारिक षात न नहात यो ऊंदा षन माष
न हूं सहु मे टीइ ठाई ॥ केसव ज्यु षमषूष हूं हूष तिआई
है तो पहि छाडि जिठाई ॥ तोरे इन ऊठ इ को रस रंच कवा
षिगल कारिवे पाहूं ठिवाई ॥ ता दिन तें उनि राषी उठाइ सम
नि सुधा व सुधा की मिठाई ॥ ३९ ॥ पुन ॥ है नु जमनु जेती
व जल ज थल जनि के पाप रोई रहत जहां काल सों सम
न है ॥ अनंत अजर अजअ मरो मरत परिके सव नि कासि
जाने सोई तो अमन है ॥ वजत भुवन सुनि सत्रुजित वर
करि वेद भाग गौ भैया भाग निज्यों भाग पारे भव के भवन
माग भय को मवन है ॥ ४० ॥ दोहा ॥ इहि विधि वरन्हु

बरनबहुनवरसरसिकविचारि ॥ बांधहुहत्तिकवित्तकी
कहिकेसवबिबिधिचारि ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमा
रइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायांरसअनरसवर्न
नेनामचतुर्दशःप्रभावः ॥ १४ ॥ अथवृत्तिवर्ननं ॥ दोहा
॥ प्रथमकैसिकीभारतीभनिआरभटीभांति ॥ कहिके
सवसुभसात्विकीचतुरचतुरबिधिजाति ॥ १ ॥ अथकै
सिकीलछनं ॥ दोहा ॥ कहियेकेसवरासजहंकरुनाहा
सिसिंगार ॥ सरलबरनसुभभावजहंकैसिकीविचा
र ॥ २ ॥ कवित्त ॥ मिलिवेकोंएककिरैमिलिमिलिहूति
कानिमिलिमनमनहीबिलासबिलसातिहै ॥ बोलिवे
कोंएकबालबोलसुनिवेकोंऔरबोलिबोलितीरथ
निवृतनिवसतिहै ॥ देषिवेकोंएकफिरैदेवतासीहोरी
होरीदेवनामनाइहिनहानमनसतिहै ॥ कीजैकहाक
रमकोंएहीहपमेरीमाईहतोमेरेकान्हजूकैनावहीह
सतिहै ॥ ३ ॥ अथभारतीलछनं ॥ दोहा ॥ बरनियेजाम
हिंबीररसऔरसअदभुतहास ॥ कहिकेसवसुभअ
र्थजहसोभारतीप्रकास ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ काननिकन
कपत्रबककबसकंतिकानधुजगुलसुलीफलकनिअति
सुषदाइ ॥ केसवछबीलोछत्रसुसीसफूलसारथीसोकै
सरिकीआडअधराधिकाररचीबनाइ ॥ नीकेहानकार
समनीकैमोतीनीकोनासाएककहीबिलोकनिगुण
गलोगसैविकाइ ॥ लोचनबिसालभालजरितुजराइल
सुमानौबढ्योमीननिकेरथमनमथराइ ॥ ५ ॥ अथ
आरभटीलछनं ॥ दोहा ॥ केसवजामेंरुद्ररसभयवी
भत्सकुजानि ॥ आरभटीआरंभयहपदपदजमक
बषानि ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ घोरघनेंघनघोरतसज्जलउ
ज्जलकज्जलकीनहविराचै ॥ फूलेफिरेंइभसेनभया
इकसावनकोपहितीतिछिपंचै ॥ चौहूंकुठानडि
नउपेउरयेवनिताकहिकेसवसोंचै ॥ जानिमनोड
राजबिनाब्रजलुपरकालतुरविनीनांवै ॥ ७ ॥
मानिनी ॥ दोहा ॥ अदुतन[illegible]

३६ समानसबनतहिसमुझतभावमनिसोसांतिकीसजांन
॥८॥कवित्त॥केसौदासलाषलाषभांतिनिकेअभिला
षछारिदैरीबावरीनबाहहियौहोरीसी॥राधिकाहरिकी
प्रीतिसबतेंअधिकजानिरतिरतिनाथहूकेंदेषोरति
थोरीसी॥तिनमहिभेदुनभवानिहुंपैपास्योजाइभार
थेमेभारथीकीभारथीहैभोरीसी॥एकैगतिएकैमति
एकेप्रानुएकेमनुदेषिवेकोदेहद्वैहैनैननिकीजोरीसी
॥९॥दोहा॥रहिविधिकेसवदाससब:बिनवरसवरनि
कवित्त॥पांचभांतिअनरसकह्योताहिनदीजेचित्त॥
॥१०॥इतिश्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजीतविरचिता
यांरसिकप्रियायांबतविषककवित्तप्रनिवरनंनेनामप
चदस:प्रभाव:॥१५॥अथअनरसलछनं॥दोहा॥
प्रत्यनीकुनीरसविरसदुष्योकेसवदु:संधान॥पात्रदुष
कवित्तकहकैरुकुरुककतिनवषान॥१॥अथप्रत्य
नीकरसलछन॥दोहा॥जहांसिंगारविभत्समयवी
रहिवरनेकोइ॥रुद्रहिकरुनामिलतहांप्रत्यनीक
रसहोइ॥२॥कवित्त॥हसिबोलतहीसुहेंसैसवकेस
वलाजभगावतलोकभगे॥कछुवातवलावतघेर
चलेमनआनतहीमनमसूजगे॥सषिवुजुकहेरुदु
तीमनमेरेहीजानियहैनहियोडमगे॥हरित्योंनेक
डीठिपसारतहीअंगुरीनिपसारनलोगुलगे॥३॥
अथनीरसलछनं॥दोहा॥जहांदंपतिमुहहीमिले
रहारहेयहरीति॥कपटुरहैलपिटाइमननीरसरस
कीप्रीति॥४॥कवित्त॥गाहेतसिंधुसयोननकेजिनकी
मतिकीअविरेहहरहेली॥मोहिहसीदुषुदेउरईतिन्ह
हूंसोजनावतिप्रेमपहेली॥जानीहोजातिमिलीसु
हहांजियनाहि॥त्तनीसतोदेषिवलीहमसोतिसहेली
॥५॥अथविरसलछनं॥दोहा॥जहांसोगमेभोगको
[illegible]निकहैकविकोइ॥केसवदाससुखासमोंनहोवी
होइ॥६॥[illegible]॥केसोदासऊहा[illegible]
[illegible]